Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ

(सूरः आराफ़ : 157)

अनुवाद : और हमारे लिए इस दुनिया में भी हसना लिख दे और आख़िरत में भी ।
नि:संदेह हम तेरी तरफ़ (तवज्जा करते हुए) आ गए हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 37

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18 सफ़र 1444 हिज्री कमरी, 15 तबूक 1401 हिज्री शम्सी, 15 सितम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अच्छी और बुरी सोहबत का उदाहरण

(2101) हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अच्छे हम नशीन और बुरे हम नशीन की मिसाल ऐसी है जैसी मुश्क वाले की (दुकान) और लोहार की भट्टी। मुश्क वाले से तू (दो बातों में से किसी एक से) ख़ाली नहीं रहेगा या तू उससे ख़रीदेगा, या उसकी ख़ुशबू पाएगा। और लोहार की भट्टी या तो तेरा बदन और तेरा कपड़ा जलाएगी या तू उससे बदबू पाएगा।

उपहार को बैच देना

(2104) हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बाप से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक रेशमी जोड़ा या धारीदार रेशमी जोड़ा भेजा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने देखा कि वह पहने हुए हैं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह इस लिए नहीं भेजा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उसे पहनें। यह तो केवल वही पहनता है जो आखेरत की बरकात से बेनसीब हो। मैं ने तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इस लिए भेजा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस से फ़ायदा उठाएं अर्थात बेचें।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् बियू, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

यह याद रखो कि वही कंजूस नहीं है जो अपने माल में से किसी हकदार को कुछ नहीं देता बल्कि वह भी कंजूस है जिसको अल्लाह तआला ने इलम दिया हो और वह दूसरों को सुखाने में अंतर करे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह याद रखो कि वही कंजूस नहीं है जो अपने माल में से किसी मुस्तहिक़ को कुछ नहीं देता बल्कि वह भी कंजूस है जिसको अल्लाह तआला ने इलम दिया हो और वे दूसरों को सिखाने में मअंतर करे। केवल इस ख़्याल से अपने उलूम वफ़नून से किसी को वाक़िफ़ न करना कि अगर वह सीख जावेगा तो हमारी बेक़दरी हो जावेगी या आमदनी में फ़र्क़ आजाएगा, शिर्क है, क्योंकि इस सूरत में वे इस इलम या फ़न को ही अपना राज़िक़ और ख़ुदा समझता है। इसी तरह पर जो अपने अख़लाक़ से काम नहीं लेता, वह भी बख़ील है। अख़लाक़ का देना यही होता है कि जो अख़लाक़-ए-फाज़िला अल्लाह तआला ने महिज़ अपने फ़ज़ल से दे रखे हैं, उसकी मख़लूक़ से उन अख़लाक़ से पेश आए। वे लोग उसके उदाहरण को देखकर ख़ुद भी अख़लाक़ पैदा करने की कोशिश करेंगे।

अख़लाक़ से इस क़दर ही मुराद नहीं है कि ज़बान की नरमी और अलफ़ाज़ की नरमी से काम ले, नहीं बल्कि शुजाअत, लिहाज़ , सम्मान जिस क़दर क़ुव्वतें इन्सान को दी गई हैं दरअसल सब अख़लाक़ी क़ुव्वतें हैं, उनका अवसर पर इस्तेमाल करना ही उनको अख़लाक़ी हालत में ले आता है। एक उचित अवसर पर ग़ज़ब का प्रयोग भी अख़लाक़ी रंग हासिल कर लेता है। (मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम पृष्ठ 393 प्रकाशन क़ादियान 2018 ई.)

★ ★ ★

तारीख़ से कोई एक आयत भी साबित नहीं होती जिसे बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत रखी गई हो

मुझे क़ुरआन-ए-करीम के किसी हुक्म की निसबत सबूत नहीं मिलता कि पहले और तरह हो और बाद में बदल दिया गया हो

बज़ाहिर यह मसला बिल्कुल साफ़ है लेकिन हमेशा ही लोग इस बारे में ठोकर खाते हैं और उसकी वजह यह है कि लोग बात बदलने को झूठ समझते हैं, हालाँकि सज़ा को बदलना झूठ नहीं होता, वादा बदलना झूठ होता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः नहल आयत : 102

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۱۰۲

(अनुवाद : और जब हम किसी निशान की जगह पर कोई और निशान लाते हैं और (इस में क्या शक है कि) अल्लाह तआला जो कुछ उतारता है अक्सर इलम नहीं रखते की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कुछ मुफ़स्सेरीन ने इस आयत के यह माने किए हैं कि जब क़ुरआन-ए-करीम की एक आयत मंसूख़ करके दूसरी आयत नाज़िल की जाती, तो कुफ़्फ़ार एतराज़ करते कि तुम झूठे हो अगर क़ुरआन-ए-करीम ख़ुदा तआला का कलाम होता तो उसकी आयतें मंसूख़ क्यों होतीं।

मेरे नज़दीक यह माने दरुस्त नहीं क्योंकि तारीख़ से कोई एक आयत भी साबित नहीं होती जिसे बदल कर उस की जगह दूसरी आयत रखी गई हो।अगर ऐसा होता तो क़ुरआन के सैकड़ों हाफ़िज़ जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में क़ुरआन-ए-करीम को हिफ़्ज़ कर लिया था इस अमर की शहादत देते कि पहले हमें अमुक आयत के बाद अमुक आयत याद करवाई गई थी लेकिन इसके बाद उसे बदल कर अमुक आयत याद कराई गई। इस किस्म की शहादत का न मिलना बताता है कि इस बारे में जिस क़दर ख़्यालात प्रचलित हैं उनकी बुनियाद महिज़ कल्पनाओं पर है न कि इलम पर।

मैं इसका इंकारी नहीं कि कुछ आदेश ज़माना नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में बदले गए हैं। परन्तु मुझे क़ुरआन-ए-करीम के किसी हुक्म की निसबत सबूत नहीं मिलता कि पहले और तरह हो और बाद में बदल दिया गया हो। मेरे नज़दीक जो अहकाम वक़्ती होते थे वह ग़ैर क़ुरआन वह्यी से नाज़िल होते थे। क़ुरआन-ए-करीम में उतरते ही न थे। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम को बदलने की ज़रूरत ही नहीं होती थी। इस पर यह सवाल हो सकता है कि अगर आयात क़ुरआनी को कभी बदला नहीं गया तो इस आयत के क्या माने हुए? तो इस का उत्तर यह है कि आयत के वे माने जिनमें यह लफ़्ज़ आमतौर पर क़ुरआन-ए-करीम में इस्तेमाल हुआ है, निशान-ए-आसमानी के हैं और वही इस जगह मुराद हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब हम एक निशान बदल कर उसकी जगह दूसरा निशान ले आते हैं और ऐसा करना क़ाबिल एतराज़ नहीं होता, क्योंकि इस अमर को तो अल्लाह तआला ही जानता है कि कौन सा निशान किस मौक़ा के लिए मुनासिब है तो कुफ़्फ़ार एतराज़ करने लग जाते हैं और कहते हैं कि तो तू झूठा है। परन्तु यह एतराज़ उनका जहालत पर आधारित होता है। यह वह क़ानून है जिसका ज़हूर हर नबी के ज़माना में होता है। अर्थात हर नबी को कुछ इंज़ारी बातें बताई जाती हैं जो दरहक़ीक़त शर्त के साथ होती हैं मुख़ातब क़ौम के क़ुलूब की हालत से, अगर वह अपने दिल की हालत बदल लें तो वह इंज़ार की ख़बर भी टल जाती है। जैसे क़ुरआन-ए-करीम में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम का वाक़िया वर्णन फ़रमाया है कि उनकी हलाकत की ख़बर हज़रत यूनुस

शेष पृष्ठ 09पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

यह जलसा कोई संसारिक मेला नहीं है बल्कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों को सुनने और उनके मुताबिक़ अपने आपको ढालने के लिए हम यहां जमा होते हैं

दुनिया यह कोशिश करती है कि हमें रज़ाकाराना काम करने के लिए लोग मिलें लेकिन जमाअत अहमदिया की तारीख़ इसके बिल्कुल विपरीत उदाहरण पेश करती है कि इतने काम करने वाले आ जाते हैं कि इंतेज़ामिया को मुश्किल पेश आती है कि उन्हें सम्भालें किस तरह

जलसे के इन तीन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की इस भावना से ख़िदमत करें कि उन्हें हमेशा यह एहसास रहे और दिल में यह रहे कि हमने अपने अफ़सरों से या किसी मेहमान की तरफ़ से इस ख़िदमत का कोई सिला नहीं लेना

जलसा सालाना बर्तानिया 2022 ई. के अवसर पर मेज़बानों और मेहमानों को अपने अपने फ़रायज़ अदा करने के विषय में ज़रीं नसाएह

जलसे के दिनों में उमूमी दुआओं के साथ-साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 अगस्त 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से इस साल जलसा सालाना बर्तानिया 2019 ई. के बाद दुबारा बड़े पैमाने पर आयोजित हो रहा है।

पिछले वर्ष भी जलसा हुआ था लेकिन सीमित संख्या के साथ। जबकि इस साल भी यह जलसा सालाना सिर्फ़ बर्तानिया जमाअत का है और बाहर के मेहमान बहुत सीमित संख्या में शामिल हो रहे हैं लेकिन तीनों दिन इन शा अल्लाह तआला बर्तानिया की सब जमाअतों को शामिल होने की आज्ञा है और इंशा-ए-अल्लाह होंगी। उम्मीद है इन शा अल्लाह तआला अच्छी हाज़िरी हो जाएगी।

जैसा कि हम सब जानते हैं कोविड महामारी की वजह से बाक़ायदा जलसा सालाना का तसलसुल एक साल तो बिल्कुल ही तोड़ना पड़ा और जलसा की बरकात से हम बाक़ायदा फ़ैज़याब नहीं हो सके। इस साल भी इस महामारी का ज़ोर कम ज़्यादा होता रहा है और आजकल भी यह पूरी तरह ख़त्म नहीं हुई बल्कि कुछ स्थानों पर, यहां भी और दुनिया के दूसरे देशों में भी, पिछले दिनों में यह बढ़ी है लेकिन हुकूमत की तरफ़ से जो इकट्ठे होने पर पाबंदीयां थीं वे अब इतनी नहीं रहीं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सब एहतियाती तदबीरों को ख़त्म कर दें।

सब एहतियाती पहलूओं को सब शामिल होने वालों को बहरहाल सामने रखना चाहिए और उनकी पाबंदी करनी चाहिए।

एहतियाती तदबीरों में से एक तो यह है कि सब शामिल होने वाले भी जब जलसा गाह में बैठे हों उस वक़्त और ड्यूटी वाले भी जब ड्यूटीयाँ दे रहे हों उस वक़्त या फिर बाहर फिर रहे हों तब भी मास्क पहन कर रखने की पाबंदी करें। इसी तरह इंतेज़ामिया ने भी इस साल यह इंतेज़ाम किया हुआ है कि सुबह आते हुए और वापस जाते हुए होम्योपैथी दवाई जो उनके ख़्याल में इस बिमारी के लिए बेहतर है, देने का इंतेज़ाम किया है। अल्लाह तआला इस में शिफ़ा भी रखे। दवाई में शिफ़ा रखना तो अल्लाह तआला का काम है लेकिन हमें ज़ाहेरी कोशिश करनी चाहिए। इस सिलसिला में मैं समस्त शामिल होने वालों से कहूँगा कि इंतेज़ामिया से सहयोग करें।

जलसा के हवाले से कारकुनान, और रज़ाकार जो अपना वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों के लिए क़ुर्बान करते हैं उन्हें में जलसा से उमूमन एक हफ़्ता पहले ख़ुतबा में कुछ बातों की तरफ़ तवज्जा दिलाता हूँ। पिछले ख़ुतबा में मैं इस तरफ़ तवज्जा नहीं दिला सका इसलिए आज इस बारे में कुछ बातें करूँगा। कुछ बच्चे, नौजवान और डयूटी में नए शामिल होने वाले भी हैं उनको तवज्जा पैदा हो जाती है। पिछले तीन सालों में पाकिस्तान से भी यहां बहुत से लोग आए हैं जिन्हें जलसा की डयूटियों का अनुभव नहीं है। एक लंबा अरसा हो गया वहां जलसे नहीं हुए। इस तरफ़ तवज्जा दिलाने से उनको उनके जो अपने फ़रायज़ हैं उनकी अदायगी का भी पता चल जाता है या पता चल जाएगा। इसी तरह पुराने कारकुनान को भी याददहानी हो जाती है। बहरहाल मुख़्तसेरन इस बारे में कुछ कहूँगा और इस के इलावा आने वाले मेहमानों से भी बाअज़ बातें याददेहानी के तौर पर कहूँगा। अगर हम इन बातों को मद्द-ए-नज़र रखें तो जलसा के हक़ीक़ी माहौल से इन शा अल्लाह तआला हम फ़ायदा उठाते रहेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह जलसा कोई संसारिक मेला नहीं है।

(उद्धरित शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395)

बल्कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों को सुनने और उनके मुताबिक़ अपने आपको ढालने के लिए हम यहां जमा होते हैं और हुए हैं। जब हम इन बातों पर अमल करते हैं जो अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहीं तो हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी अहसन रंग में हम करने वाले बन सकते हैं। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा पहले कारकुनान से चंद बातें कहनी चाहूँगा। मासक के बारे में और दवाई के बारे में तो मैंने पहले ही बता दिया, उसकी पाबंदी करें। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमारे नौजवानों को भी, बच्चों को भी, बूढ़ों को भी, औरतों को भी इस बात का शौक़ भी है और इदराक भी है कि हमने जलसा पर आने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए अपने आपको पेश करना है और अहसन रंग में ख़िदमत भी करनी है। चाहे वे लोग जो ख़िदमत करने वाले हैं किसी भी पेशे से ताल्लुक़ रखने वाले हैं या किसी भी ख़ानदान से ताल्लुक़ रखने वाले हैं, अमीर हैं या ग़रीब हैं, सब इस भावना से आते हैं। जलसा का काम केवल जलसा के इन तीन दिनों में नहीं हो रहा होता बल्कि कई हफ़्ते पहले शुरू हो जाता है और अब तो एम.टी.ए अपनी ख़बरों में और छोटे-छोटे कलिप्स (clips) की सूरत में यह दिखाता रहता है कि किस तरह काम हो रहा है। कुछ काम बेशक बाहर की कंपनियों और ठेकेदारों से करवाया जाता है लेकिन इस के इलावा भी बहुत सा काम है जिसके लिए अफ़रादी क़ुव्वत की ज़रूरत होती है और ये क़ुव्वत रज़ाकार अपना वक़्त क़ुर्बान कर के, अपनी ख़िदमात पेश करके मुहय्या करते हैं और जैसा कि मैंने कहा हर वर्ग के लोग इस में शामिल हैं। दुनिया यह कोशिश करती है कि हमें रज़ाकाराना काम करने के लिए लोग मिलें लेकिन जमात अहमदिया की तारीख़ इसके बिल्कुल बरअक्स मिसाल पेश करती है कि इतने काम करने वाले आजाते हैं कि इंतेज़ामिया को मुश्किल पेश आती है कि उन्हें सम्भालें किस तरह।

जो जलसा की बाक़ायदा ड्यूटीयाँ हैं उनमें तो पहले चार्ट बन जाते हैं, प्रोग्राम बन जाते हैं, हर विभाग को इस की ज़रूरत के मुताबिक़ कारकुन मुहय्या करने की कोशिश की जाती है और कर दिए जाते हैं लेकिन जलसा से पहले का जो वक़ार-ए-अमल है या बाद का जो वक़ार अमल का काम है इस में बसा-औक़ात तवक़्क़ो से ज़्यादा अफ़राद आ जाते हैं क्योंकि उमूमी तहरीक की जाती है। अभी पिछले इतवार को ही इतने कारकुन अदीकतुल महदी में जमा हो गए जिसकी इंतेज़ामिया को उम्मीद भी नहीं थी और उनके लिए मुझे पता लगा है खाने का भी सही इंतिज़ाम नहीं हो सका हालाँकि

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने समस्त तहफ़्फ़ुज़ात और ख़ौफ़ों को अमन में बदल दिया

अल्लाह तआला हर अहमदी के ईमान-ओ-ईक़ान में तरक़्क़ी दे और जलसा के असरात दायमी हों और वक़्ती न हों

मैं समस्त कारकुनान का शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्हों ने जलसा की तैयारी से लेकर वाइंडअप तक बे-लौस हो कर काम किया

एक वहदत थी जिसका नज़ारा हम ने एम. टी. ए. के कैमरे की आँख के माध्यम से किया, यह अल्लाह तआला का विशेष फ़ज़्ल है

एम. टी. ए. के कारकुनान इस बात पर शुक्रिया के हकदार हैं कि उन्होंने जमाअत अहमदिया की इकाई को एम. टी. ए. के ज़रिया समस्त दुनिया को दिखा कर मुख़ालेफ़ीन के मुँह-बंद किए

यूं गुमान होता है कि यह मुहब्बत ख़ुद ख़ुदा तआला ने लोगों के दिलों में डाली है क्योंकि इस में बनावट का कोई संदेह नहीं था (एक ग़ैर अहमदी आलम-ए-दीन)

आज हक़ीक़ी इस्लाम अहमदियत ही है और वह दिन दूर नहीं जब लोग इस हक़ीक़त को पहचान लेंगे और इस में दाख़िल हो जाऐंगे (एक ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त)

मैं इस बात को कहते हुए बिल्कुल नहीं शरमाऊंगा कि इस्लाम ने औरत को जो हुक़ूक़ दिए हैं वे ईसाइयत ने नहीं दिए (एक ईसाई पादरी)

जिस तरह जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की इस हक़ीक़ी तालीम को पेश किया है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें दी थी, मेरे नज़दीक यह जमाअत की ही विशेषता है (एक हम्बली इमाम)

इस जलसा से मेरा इस इलाही जमाअत पर ईमान बढ़ा है (इंडोनेशियन नौ-मुबाईन)

यह आलमी जलसा सालाना इस बात का मुँह बोलता सबूत है कि जमाअत में इत्तिहाद है, सारी दुनिया के अहमदी एक ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ पर जमा हैं (अल्बानियन नौ अहमदी)

मैंने आज तक कभी ऐसा प्रोग्राम नहीं देखा, जिसमें लोग अपने लीडर को इतने प्यार और एहतेराम से सुनते हों (एक ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त)

इस वक़्त अगर उम्मत-ए-मुस्लिमा को कोई बचा सकता है तो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ही है और आज मैं अहमदियत में शामिल होने का ऐलान करती हूँ (दौरान-ए-जलसा अहमदियत क़बूल करने वाली महिला)

ख़लीतुल मसीह का ख़िताब क़ुरआन-ए-मजीद की आयत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत और अकली दलायल से परिपूर्ण हैं (अल्बानियन ज़ेरे तबलीग़ दोस्त)

जलसा सालाना बर्तानिया 2022 ई. के अवसर पर दुनिया-भर से जलसे में शामिल होने वाले अहमदी और ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों के विचार

तीन मरहूमीन मुहतरमा नुसरत क़ुदरत सुल्ताना साहिबा पत्नी माननीय क़ुदरतुल्लाह अदनान साहिब आफ़ कैनेडा

चौधरी लतीफ़ अहमद झम्मट साहिब (वाकिफ-ए-ज़िंदगी)और माननीय मुश्ताक़ अहमद आलिम साहिब का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 अगस्त 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अलहमदु लिल्लाह, अल्लाह तआला ने हमें पिछले हफ़्ता बर्तानिया का जलसा सालाना आयोजित करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और अल्लाह तआला के बेशुमार फ़ज़्ल हमने इन तीन दिनों में देखे। इस साल भी पहले यही ख़्याल था कि कोविड (covid) की जो महामारी फैली हुई है उसकी वजह से पिछले साल की तरह छोटे पैमाने पर जलसा किया जाए लेकिन फिर आख़िरी महीने में यह फ़ैसला हुआ कि बर्तानिया के समस्त अहमदियों को जलसा में शमूलियत की इजाज़त दी जाए। इस फ़ैसला पर शुरू में तो इंतेज़ामिया कुछ परेशान थी लेकिन बहरहाल फिर उन्होंने तैयारी शुरू की और जैसा कि मैंने कहा कि हमने अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को बरसते देखा।

जलसा का बड़ा इंतिज़ार होता है, सारा साल इंतिज़ार रहता है। बड़ी तैयारियां भी इंतेज़ामिया को करनी पड़ती हैं लेकिन फिर जब जलसा शुरू होता है तो पता ही नहीं चलता कि ये तीन दिन किस तरह पलक झपकने में गुज़र गए। इस साल लोगों को भी मुख़्तलिफ़ हवालों से कुछ तहफ़्फ़ुज़ात थे। मुझे भी कुछ ने ख़त लिखे और फ़िक्र का इज़हार किया। लोग ख़ुद भी बहुत दुआएं कर रहे थे। मैं भी दुआएं कर रहा था। जमाअत के अफ़राद भी दुआएं कर रहे थे। बहरहाल अल्लाह तआला ने समस्त तहफ़्फ़ुज़ात और ख़ौफ़ों को अमन में बदल दिया।

कोविड की जो महामारी फैली हुई है इसकी भी एक वजह थी। बहरहाल इसका कुछ असर तो शायद बाअज़ शामिल होने वालों पर हो लेकिन उमूमी तौर पर अल्लाह तआला का बहुत फ़ज़्ल है।

बहरहाल अब जलसा के हवाले से मैं बाअज़ बातें करना चाहता हूँ। जलसा के अगले ख़ुतबा में उमूमन कारकुनान का शुक्रिया भी अदा करता हूँ और शामिल होने वाले मेहमानों के तास्सुरात का भी वर्णन करता हूँ और अल्लाह तआला के जलसे के हवाले से फ़ज़्लों का भी वर्णन होता है। पहले तो मैं समस्त कारकुनान का शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्हों ने जलसा की तैयारी से लेकर वाइंडअप तक बेलौस हो कर काम किया और अब तक वाइंडअप का काम कर रहे हैं जो किसी न किसी सूरत में जारी है। फिर जलसा के दौरान मुख़्तलिफ़ विभाग में कारकुनान और कारकुनात ने उमूमन अपनी सलाहियतों के मुताबिक़ अच्छा काम किया जिसके लिए समस्त शामिल होने वालों को शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

यही इस्लामी अख़लाक़ है कि जिससे तुम्हें किसी रंग में भी फ़ायदा हो, तुम्हारे कोई काम आए तो इस का शुक्रिया अदा करो और बंदों की शुक्रगुज़ारी ही अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी की तरफ़ लेकर जाती है। बच्चों, बड़ों, औरतों, लड़कियों ने ख़िदमत का हक़ अदा करने की कोशिश की। बाअज़ ख़ामियाँ और कमज़ोरियाँ भी सामने आई हैं लेकिन इतने बड़े इंतेज़ाम में यह कमज़ोरियाँ हो जाती हैं लेकिन इंतेज़ामिया का यह काम है कि इन कमज़ोरीयों और ख़ामियों को दूर करे। उदाहरण लजना के खाना खिलाने के विभाग की बाअज़ शिकायात हैं या बाअज़ और बातें हैं। इस बारे में लोगों के जो ख़ुतूत आए हैं वे मैं साथ-साथ इंतेज़ामिया को भिजवा रहा हूँ। इसके मुताबिक़ जायज़ा लेकर उन्हें अपनी लाल किताब में ये कमियां दर्ज कर के अगले साल बेहतर इंतेज़ाम करने की हर विभाग में कोशिश करनी चाहिए।

लेकिन बहरहाल उमूमी तौर पर कारकुनान ने बहुत काम किया है, अच्छा काम किया है। बच्चों ने भी अपनी डयूटियों का हक़ अदा किया है। बहरहाल इन सब का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ।

एम. टी. ए. ने भी बहुत अच्छी कवरेज दी है। इस दफ़ा उन्होंने स्टूडियो भी समस्त का समस्त ख़ुद तैयार किया है और इससे कई हज़ार पाऊंड की बचत भी हुई। इस साल यह भी था कि बहुत से तरक़्क़ी याफताह और ग़ैर तरक़्क़ी याफताह मुल्कों को जलसा की कार्रवाई के दौरान मिला दिया जिससे यहां बैठे हुए लोग भी दूसरे मुल्कों में बसने वाले अपने भाईयों को देख रहे थे।

एक वहदत थी जिसका नज़ारा हमने एम. टी. ए. के कैमरे की आँख के ज़रीया

किया। यह अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है। एम. टी. ए. के कारकुनान इस बात पर शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं कि उन्होंने जमाअत अहमदिया की इकाई को एम. टी. ए. के ज़रीया समस्त दुनिया को दिखा कर मुख़ालेफ़ीन के मुँह-बंद किए।

बहरहाल अब मैं बाअज़ ग़ैरों और अपनों के तास्सुरात पेश करता हूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वर्णन करता हूँ। जलसा के ज़रीया किस तरह अल्लाह तआला ने दुनियामें इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया इस का वर्णन करता हूँ।

नाईजर के एक साहिब अबू बकर सी साहिब, ग़ैर अज़ जमाअत हैं और एक ग़ैर अहमदी आलिम हैं। नयामे शहर में एक मस्जिद के इमाम भी हैं। वे कहते हैं कि मुझे सबसे ज़्यादा जिस बात ने प्रभावित किया वे लोगों का ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक़ है और किस तरह लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त के एक इशारे पर कामिल इताअत का प्रदर्शन कर रहे थे। तक़रीरों के दौरान मुकम्मल ख़ामोशी और सुकूत तारी था। फिर कहते हैं कि यूं गुमान होता है कि यह मुहब्बत ख़ुद ख़ुदा तआला ने लोगों के दिलों में डाली है क्योंकि इस में बनावट का कोई संदेह नहीं था।

फिर बुर्कीना फासो के एक और ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त इसहाक़ साहिब कहते हैं कि आपका जलसा सालाना बहुत शानदार था। इस की मिसाल नहीं मिलती। इतने लोगों का एक जगह जमा होना किसी मोजज़े से कम नहीं और एक इमाम की पैरवी। यह जलसा अपनी मिसाल आप है। कहने लगे कोई माने या न माने आज हक़ीक़ी इस्लाम अहमदियत ही है और वह दिन दूर नहीं जब लोग इस हक़ीक़त को पहचान लेंगे और इस में दाख़िल हो जाऐंगे।

यह ग़ैरों के तबसरे हैं जो मुस्लमान भी हैं और अल्लाह तआला इस तरफ़ उनके रुख फेर रहा है।

फिर फ्रैंच गयाना में एक सीरियन ग़ैर अज़ जमाअत हैं। पहली दफ़ा उन्होंने जलसा देखा है। अरबी बोलने वालों के लिए मस्जिद में एम. टी. ए. अल् अरबिया के ज़रीया कार्रवाई देखने का इंतेज़ाम भी था। ये कहते हैं कि मैं पहली बार जमाअत का पैग़ाम सुन रहा हूँ और पहली बार मैंने आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनी है। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ कि मुस्लमानों में एक ऐसी तंज़ीम है जो इस तरह इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम दुनिया में पहुंचा रही है और एक ख़लीफ़ा की बैअत में सारी दुनिया में काम कर रही है। मैं इन शा अल्लाह अब ज़रूर आपकी जमाअत के बारे में अध्यन करूँगा और मज़ीद तहक़ीक़ करूँगा।

फिर फ्रैंच गयाना के ही एक ग़ैर अज़ जमाअसत मुस्लमान हैं। कार्रवाई सुनने के लिए आए। कहते हैं कि जलसा सालाना यू.के. की कार्रवाई मैंने पहली बार सुनी है और मैं बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। आपकी जमाअत विश्वयापी है। कहते हैं कि मेरा असल ताल्लुक़ गिनी कनाकरी से है। जलसा की कार्रवाई के दौरान देख रहा था कि बहुत से देश लाईव स्ट्रीम के ज़रीया इस जलसा में शामिल हैं लेकिन गिनी कनाकरी नज़र नहीं आया। अभी मैं यह सोच ही रहा था कि उसी वक़्त स्क्रीन पर गिनी कनाकरी की जमाअत की वीडीयो आ गई और मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि वहां भी आपकी जमाअत क़ायम है। और फिर कहते हैं कि आपके ख़लीफ़ा ने जो औरतों के हुक़ूक़ बयान किए हैं इस पर मुझे अपने आपके मुस्लमान होने पर फ़ख़र है।

लाइबेरिया से एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान बोब ऐम डो (bob M dolo) साहिब हैं। यह एक बिजली के महिकमे में मैनेजर के तौर पर काम करते हैं। पढ़े लिखे आदमी हैं। कहते हैं कि मैं अहमदिया ख़लीफ़ा के ख़िताब को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इस से क़बल मैं यही समझता था कि इस्लाम में औरतों के कोई हुक़ूक़ नहीं हैं लेकिन आज यह ख़िताब सुन कर मुझे इस बात का इलम हुआ कि इस्लाम में औरतों के हुक़ूक़ बड़ी तफ़सील के साथ बयान किए गए हैं जो किसी और मज़हब में हमें नहीं मिलते। इस से पहले मैंने यह सुन रखा था कि अहमदिया जमाअत बड़ी मुनज़्ज़म जमाअत है। आज अपनी आँखों से भी देख लिया है कि किस तरह अहमदिया जमाअसत एक लीडर के हाथ पर मुत्तहिद है और दुनिया में अमन की कोशिशों में व्यस्त है।

ज़ीमबया के एक साहिब बोले (katebule) साहिब हैं। पेशा के लिहाज़ से यह पास्टर (pastor) हैं। यह कहते हैं जलसा सालाना के आख़िरी रोज़ आपके ख़लीफ़ा का अंतिम ख़िताब सुना, बहुत मुतास्सिर हुआ। कहने लगे कि आपके ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत हैरत-अंगेज़ था।

इस्लाम जिस ख़ूबसूरती से औरत के हुक़ूक़ बयान करता है मुझे बिल्कुल इस बात का अंदाज़ा नहीं था। मैं यही समझता था कि इस्लाम ने औरत के हुक़ूक़ ज़बत किए हैं और औरत को किसी किस्म की आज़ादी नहीं दी। मेरे नज़दीक इस्लाम ने औरत को घर के अंदर बंद कर के रख दिया था परन्तु आज यह ख़िताब सुनकर मेरा नज़रिया बदल गया है।

मैं इस बात को कहते हुए क़तअन नहीं शरमाऊंगा कि इस्लाम ने औरत को जो हुक़ूक़ दिए हैं वे ईसाइयत ने नहीं दिए। ये ईसाई पादरी हैं और कहते हैं कि जो हुक़ूक़ इस्लाम ने दिए हैं वे ईसाईयत ने नहीं दिए। हम अपनी औरतों पर बिला-वजह ज़्यादती करते हैं और औरतों को अपनी ग़ुलाम समझते हैं। आपके ख़लीफ़ा ने बिल्कुल सही कहा कि मर्द किसी न किसी तरह ताक़त के ज़ोर पर अपने हुक़ूक़ अदा करवा ही लेता है। आज मुझे महसूस हुआ कि इस्लाम मुतशद्दिद तालीम का रवादार नहीं बल्कि इस्लाम की तालीम बहुत ख़ूबसूरत है।

फिर एवरी कोस्ट के एक ज़ेरे तब्लीग़ दोस्त हैं। कहने लगे कि जमाअत का तआरुफ़ मुख़्तलिफ़ ज़राए से होता रहा है लेकिन जलसा सालाना यू.के. ने एक मुनफ़रद अंदाज़ से अपना परिचय पेश किया। उन्होंने पहली बार कोई जलसा टी.वी. के ज़रीया बराह-ए-रास्त देखा है। जलसा के इंतेज़ामात देखकर बहुत मुतास्सिर हुए। कहते हैं कि इतनी बड़ी संख्या का एक मुनज़्ज़म और एक बासलीक़ा तरीक़े पर एक प्रोग्राम में शिरकत करना बताता है कि ख़िलाफ़त की तर्बीयत का उन पर एक गहरा असर है। कहने लगे कि उन्हें मालूम तो नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर लोग कैसे बैअत करते हैं लेकिन आज ख़लीफ़ा के हाथ पर लोगों को बैअत करता देखकर जो गहरा असर दिल पर हुआ है और जो कैफ़ीयत है वह नाक़ाबिल-ए-बयान है। उन्होंने कहा कि अब बाक़ायदा आपके ख़लीफ़ा का ख़ुतबा सुना करूँगा।

कोंगो किंशासा, यहां इमीग्रेशन डिपार्टमैंट के नुमाइंदा आए। जलसा में शामिल हुए और वहां उन्होंने लोगों में मेरा ख़िताब सुना। कहने लगे इस ख़िताब ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि वह अब तक अहमदी क्यों नहीं हैं और इस बात का वादा कर के गए हैं कि आइन्दा मिशन हाऊस आते रहेंगे और जमाअत के बारे में मज़ीद तहक़ीक़ करेंगे।

एम. टी. ए. के ज़रीया से लोगों की तर्बीयत भी होती हैं मराओ (maroua) जमाअत के मिशन हाऊस में भी जलसा यू.के देखने का इंतेज़ाम था। कैमरोन में एक जमाअत मराओ की है। यहां जो लोग जलसा देख रहे थे उनमें क़रीबी गांव से एक महिला जिनका नाम उमल (ummul) था शामिल थीं। तीनों दिन प्रोग्राम से इस्तिफ़ादा किया। जलसा सालाना ख़त्म होने पर उन्होंने वहां पर मौजूद सब लोगों को कहा कि हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हमारे पास एम. टी. ए. है। एम. टी. ए. एक टी.वी चैनल नहीं बल्कि एक स्कूल और यूनीवर्सिटी है जहां इन्सान रोज़ाना इलम सीखता है। हमने भी इन तीन दिनों में बहुत इलम पाया है। हमारे पास केबल पर एम. टी. ए. मयस्सर है। (वहां केबल पर भी एम. टी. ए. मयस्सर है।) इसलिए हर एक को इस से फ़ायदा उठाना चाहिए। उन्होंने वहां नसीहत की कि बाक़ायदगी से घरों में एम. टी. ए. देखना चाहिए और बच्चों को भी दिखाना चाहिए, कि सब का इस्लामी इलम बढ़े। ख़ासतौर पर ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़िताबात और ख़ुतबात ज़रूर सुनें ताकि हमारा ईमान बढ़े।

कोंगो किंशासा से ही एक और तास्सुर है। अलीबो (ilebo) जमाअत में जलसा की कार्रवाई देखने के लिए हनबली मुस्लमानों के इमाम को बुलाया गया। जलसा के इख़तेताम पर वे कहने लगे कि जिस तरह जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की इस हक़ीक़ी तालीम को पेश किया है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें दी थी, मेरे नज़दीक यह जमाअत की ही विशेषता है। मैं अब यह चाहता हूँ कि कुछ भी कर के जमाअत में शमूलीयत इख़तेयार कर लूँ। अल्लाह मुझे इसकी तौफ़ीक़ दे। अल्लाह तआला करे। अल्लाह तआला उनको तौफ़ीक़ दे।

एक अल्बानियन ज़ेरे तब्लीग़ मुस्लमान लड़की विलमा (vilma) हैं। कहने लगीं कि जलसा सालाना यू.के एक अज़ीमुश्शान जलसा था जिसमें शामिल होने वालों की संख्या ग़ैरमामूली थी। मैं अभी तक जमाअत में शामिल तो नहीं हुई लेकिन इस जलसा से मुझे तहरीक हुई है कि मैं इस जमाअत की एहमीयत और सच्चाई के

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मुताल्लिक़ संजीदगी से ग़ौर करूँ और ख़लीफ़-ए-वक़्त का ख़िताब सुनकर मुझे महसूस हुआ कि मैं उनकी बातों से सहमत हूँ। जिस तरह उन्होंने मज़ामीन बयान किए हैं उनसे मेरे ईमान में बहुत इज़ाफ़ा हुआ। मेरी ख़ाहिश है कि इस तरह के जलसों में आइन्दा भी मैं ज़ाती तौर पर शामिल हो सकूँ।

फ़्रैंच गयाना में एक अफ़्ग़ान महिला हैं। अपने बच्चों के साथ इख़तेतामी ख़िताब सुनने आई थीं। कहती हैं कि आपकी जमाअत के बारे में हमें पहले से थोड़ा बहुत मालूम था लेकिन जलसा यू.के में आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनकर एक अजीब सी कैफ़ीयत हो गई थी। इस्लाम में औरतों के हुक़ूक़ के बारे में सुन कर कि हमारा मज़हब औरतों के हुक़ूक़ का कितना ख़्याल रखता है बहुत सुकून मिल रहा था। कहती हैं शायद इसलिए भी ज़्यादा महसूस हो रहा था क्योंकि अफ़्ग़ानिस्तान में तालिबान जो इस्लाम क़ायम करना चाहते हैं इस में तो औरत की कोई हैसियत ही नहीं है जबकि हक़ीक़त में इस्लाम तो औरतों के हुक़ूक़ का कामिल ज़ामिन है।

लाइबेरिया में एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान अमोस वूओनसिए (amos wonseah) साहिब थे। पुलिस में सी आई.डी. कमांडर हैं। पढ़े लिखे आदमी हैं। दावत पर जलसा में शामिल हुए। कहने लगे जब दूसरे रोज़ का उन्होंने मेरा ख़िताब सुना तो काफ़ी मुतास्सिर हुए। दूसरे रोज़ की उनको दावत थी। तीसरे दिन वे ख़ुद ही दुबारा आ गए और ख़िताब के बाद इस बात का इज़हार किया कि इस्लाम के बारे में मेरे ख़्यालात बहुत मनफ़ी थे और इसकी कुछ वजह कुछ मुस्लमानों का रवैय्या भी था लेकिन जलसा के प्रोग्राम देखकर मैंने महसूस किया कि इस्लाम एक पुरअमन मज़हब है और अहमदिया जमाअत हर लिहाज़ से ख़िदमत-ए-इन्सानियत में व्यस्त है। इसलिए आज से इस्लाम के बारे में मेरे ख़्यालात बदल गए हैं और जो तहफ़्फ़ुज़ात थे दूर हो गए हैं।

तथा यह भी कहा कि अगर इस इलाक़े में अहमदिया जमाअत पहले पहुंची होती तो अब तक बहुत से लोग जमाअत के ज़रीया इस्लाम में दाख़िल हो चुके होते।

फ़्रैंच गयाना, वहां भी जमाअती तौर पर जलसा सुनने का इंतेज़ाम था। छोटी सी जमाअत है और थोड़े से लोग वहां आए थे। वहां मुल्क हेटी से ताल्लुक़ रखने वाले दो ईसाई जो ज़ेरे तब्लीग़ हैं वे इख़तेतामी ख़िताब सुनने के लिए आए। दोनों दोस्त थे। कहने लगे कि हम हैरान हैं कि आपके ख़लीफ़ा ने जो विषय अपनी तक़रीर का चुना अर्थात औरतों के हुक़ूक़ यह वही विषय है जिस पर हम दोनों पिछले दो दिनों से बात कर रहे थे कि औरतों के हुक़ूक़ के बारे में इस्लाम की तालीम क्या है? हमें मालूम नहीं था कि इस्लाम औरतों के हुक़ूक़ के बारे में इतनी कामिल और उच्च तालीम देता है।

अगर आज हमने आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर न सुनी होती तो हमें शायद इस ख़ूबसूरत और कामिल तालीम का पता ही न चलता। आज के ज़माने में औरत के हुक़ूक़ पर बात तो बहुत होती है लेकिन मर्द और औरत दोनों की जो ज़िम्मेदारियाँ हैं उन्हें हक़ीक़ी रंग में इस्लाम ही पेश करता है। आजकल ये लोग life of muhammad भी पढ़ रहे हैं और फिर उन्होंने मज़ीद लिटरेचर भी मांगा है।

मारीशस की रिपोर्ट है। वहां प्रसारण जो हो रहे थे तो लोग देखने के लिए जमा हुए। मैंबर आफ़ पार्लीमैंट तानीया देवले tania diolle) साहिबा हैं। वे आई थीं। यह पार्लीमैंटरी प्राईवेट सैक्रेटरी भी हैं। कहती हैं कि शानदार नज़ारा है। जमात अहमदिया की तक़रीबात और जमाअत अहमदिया के कल्चर का मुशाहिदा करने का बहुत अच्छा तजुर्बा है। बहुत मुतास्सिर करने वाली बात है कि आप लोग लंदन जैसे शहर में इतनी बड़ी मज़हबी तक़रीब का इनइक़ाद कर रहे हैं। कहती हैं यह बात भी दरुस्त है कि आजकल की मआशी और मुआशरती सूरत-ए-हाल के पेश-ए-नज़र मज़हब बहुत ज़्यादा एहमीयत का हामिल हो गया है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का अपना मुहासिबा करने के लिए और एक रुहानी मक़सद के लिए जमा होना बड़ी बात है। ख़ासकर जबकि हम सारे एक मुश्किल दौर में से गुज़र रहे हैं जिसमें दुनिया बहुत से बोहरानों का शिकार है।

मेरे नज़दीक इस किस्म की चीज़ें समाज को सही रास्ते पर गामज़न और आला इक़दार को बरक़रार रखने में बहुत सहायक हैं। मेरे लिए यह तजुर्बा बहुत ख़ुशगवार है। मैंने बहुत सी बातें यहां सीखी हैं। इस के साथ ही यह लमहात मेरे लिए काबिल फ़िक्र भी हैं।

नौ-मोबाईन ने भी अपने तास्सुरात भेजे हैं। बुर्कीना फासो की एक नौ-मोबाईन महिला हव्वा साहिबा हैं। कहती हैं कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के खुले और साफ़ अलफ़ाज़ हमें बता रहे हैं कि हमने अहमदियत को हक़ीक़ी इस्लाम समझ कर केवल इसलिए बैअत नहीं की कि हम दूसरों को भी अहमदी बनाएँ बल्कि इसलिए भी कि हमने किस तरह समाज में ख़ुद भी एक मिसाली अहमदी बन के रहना है और अपने क़ौल और फ़ेअल को एक करके अपने ईमान को भी मज़बूत करना है और यक़ीन में बढ़ना है।

अब लोग कहते हैं कि जी अफ़्रीक़ा के लोग अनपढ़ हैं। अब यह महिला हैं, उन्होंने कहा सिर्फ हमने ऐसी तबदीली पैदा करनी है कि हमारे कथन और कर्म बराबर हो जाएं और यह हर पढ़े लिखे अहमदी के लिए और अपने आपको पढ़ा लिखा समझने वाले अहमदी के लिए, यूरोप में रहने वालों के लिए, तरक़्क़ी याफताह मुल्कों में रहने वालों के लिए यह जो बात है सोचने वाली है और उनको ग़ौर करना चाहिए कि अपने कथनी और करनी को हर जगह एक बनाएँ।

इंडोनेशिया में एक नौ-मोबाईन महिला हैं। कहती हैं कि जलसा सालाना यू.के एक ग़ैरमामूली चीज़ है। कहती हैं मैं एक नौ-मोबाईन हूँ। यह मेरे लिए इस इलाही जमाअत में अपनी रूहानियत को बढ़ाने का लम्हा है। मैंने देखा कि लोग गिरोह के गिरोह इस मुबारक जलसा में शिरकत के लिए आते हैं। जबकि मैंने यह जलसा सिर्फ टी.वी पर देखा है लेकिन मेरा दिल और दिमाग़ जलसा यू.के में मौजूद था। इस जलसा से मेरा इस इलाही जमाअत पर ईमान बढ़ा है और मैं मुस्तक़बिल में मज़ीद बेहतर हो जाऊँगी।

कोंगो बराज़ावेल की एक रिपोर्ट है कि मस्तूरात की तरफ़ जो मेरा ख़िताब हुआ उसे सुनकर लोकल लजना ने अह्द किया कि हम भी इस्लाम अहमदियत को फैलाने के लिए अपने आपको और अपने बच्चों को हर किस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार करेंगी।

फिर एक नौ-मोबाईन कहती हैं कि रुहानी माहौल में तीन दिन गुज़रे हैं। हम तो ये चाहते हैं कि हर दिन इस तरह गुज़रे और हम रुहानी माहौल से लुतफ़ अंदोज़ होते रहीं।

इंडोनेशिया से एक नौ-मोबाईन अरी वान (erry himawan) साहिब कहते हैं मैं एक नौ-मोबाईन हूँ। जलसा सालाना यू.के को लाईव स्ट्रीम के ज़रीया देखने के बाद मेरी तरफ़ से सिर्फ एक लफ़्ज़ है हैरत-अंगेज़। मैं हैरान हूँ दुनिया-भर में सिर्फ एक इस्लामी तंज़ीम ऐसी है जिसके अरकान पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। एक टी.वी स्टेशन है जो चौबीस घंटे चलता है। मैं अपने आपसे पूछता था क्या कोई इस्लामी तंज़ीम है जैसे जहूवाज़ का विटनस (jehovah's witnesses) और मोरमंज़ (mormons) और एडविंटिस्ट एसडी (adventist-sda) वाले। ये सभी ईसाई तंज़ीमें हैं जिनके लाखों पैरोकार हैं और सैंकड़ों देशों में काम कर रहे हैं लेकिन मुझे इसका जवाब मिल गया कि एक इस्लामी तंज़ीम अहमदिया जमाअत है जो सारी दुनिया में फैली हुई है और में इस तंज़ीम का मैंबर होने पर ख़ुश हूँ। यही इस्लामी तंज़ीम मेरे किरदार और शख़्सियत के मुताबिक़ है। अब मैं अहमदी हो कर एक कारोमद शख़्स बन सकता हूँ और जस्मानी और रुहानी तरक़्क़ी हासिल कर सकता हूँ।

कज़ाख़स्तान से बुकू बयावस दाऊरी कहते हैं। जलसा ने मेरे दिल पर एक ख़ास असर किया है। मैंने जलसा सालाना की कार्रवाई अपनी पत्नी के साथ एक रुहानी माहौल में देखी। ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़िताब ने दिल-ए-पर एक ख़ास असर किया जो अलफ़ाज़ में बयान नहीं किया जा सकता। इसी तरह दीगर वक्ताओं की तक़ारीर भी बहुत अच्छी थीं। समस्त दुनिया के अहमदियों को बज़रीया एम. टी. ए. जलसा की कार्रवाई देखने की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला समस्त कारकुनान और इंतेज़ामिया को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और अपने लिए भी दुआ की दरख़ास्त की कि अल्लाह तआला यह रुहानी एहसास और कैफ़ीयत अगले साल के जलसा तक क़ायम रखे और हमेशा क़ायम रखे।

ज़ीमबया के एक नौ-मोबाईन ने जब मेरा ख़िताब सुना तो जज़बात पर क़ाबू नहीं पा सके। आँखों से आँसू जारी हो गए। साथ बैठे हुए दोस्त ने पूछना चाहा तो जवाब न दे सके और हाल से चंद मिनट के लिए बाहर चले गए। आँसू पोंछ कर दुबारा वापस आए और पूछने पर बताया कि ज़िंदगी में पहली मर्तबा ख़लीफ़ वक़्त को देखा

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

है और आवाज़ सुनी है इसलिए आँखों से आँसू जारी हो गए।

कहते हैं मेरी आयु इसी साल है। मैंने अपनी सारी ज़िंदगी भेड़ीयों के मध्य में गुज़ार दी यानी ज़ालिम लोगों के दरमयान और अहमदियत में आके मुझे पता चला कि इस्लाम की असल तालीम तो मुहब्बत फैलाना है न कि लोगों में नफ़रत फैलाना। फिर एक दिन नमाज़-ए-फ़ज्र के दरस के बाद उठकर खड़े हो गए और समस्त अहबाब को मुख़ातब करके कहा कि इस मस्जिद को लोगों से भरना केवल मुरब्बी का काम नहीं बल्कि हम सबकी ज़िम्मेदारी है। हमें सबको तब्लीग़ करनी चाहिए।

आस्ट्रेलिया के एक नौ-मोबाईन (esaw gebre) साहिब हैं जिन्हों ने पहले बैअत तो कर ली थी लेकिन ग़ैर अहमदियों के एतराज़ात से कुछ प्रभावित भी हो जाते थे और खासतौर पर यह एतराज़ कि जलसा जो है बिद्दत है। उन्होंने वहां आस्ट्रेलिया में मस्जिद बैतुल मसरूर में आलमी बैअत में शिरकत कर के कहा कि मेरे समस्त शकूक-ओ-शुबहात दूर हो गए हैं क्योंकि मुझे साफ़ नज़र आ रहा था कि जलसा आयोजित किया जाता है। यह मेरे लिए अपने ईमान की तजदीद करने का अवसर था। बैअत के दौरान ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ दुआ में शरीक हो कर मुझे कामिल यक़ीन हो गया है कि मेरी दुआएं ज़रूर क़बूल होंगी।

लोगों में ईमान में मज़बूती भी जलसा की कार्यवाहीयां देख के पैदा होती है। आस्ट्रेलिया से एक नौ-मोबाईन गबरी (mikias gebre) साहिब कहते हैं कि आलमी बैअत मेरे लिए एक हैरत-अंगेज़ अनुभव था। उस वक़्त मैं जिस रुहानी कैफ़ीयत से गुज़रा इस से क़बल मैंने वह कैफ़ीयत कभी नहीं महसूस की। एक ऐसा रुहानी माहौल था जिसने मुझे हृदय की संतुष्टि और रुहानी आनंद अता किया।

लेसोथो से एक नौ-मोबाईन यूसुफ़ लाबी साहिब कहते हैं यह मेरा पहला जलसा है और मैंने पहली दफ़ा ख़लीफ़-ए-वक़्त को देखा है। जिस तरह उन्होंने समाज की कमज़ोरियों और बुराईयों की तरफ़ इस्लाम की आला तालीमात के ज़रीया इस्लाह के तरीक़े बताए हैं वह आज तक मैंने कहीं नहीं सुनी। न ही ईसाइयत में मैं ने सीखे।

जब मैं अहमदियत के बारे में तहक़ीक़ कर रहा था और जब मैंने पहली बार ख़लीफ़-ए-वक़्त की तस्वीर देखी तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने मुझे ख़ाब में कहा कि यह सच्चा मज़हब है। अहमदियत की तरफ़ मेरा आना और हक़ीक़ी इस्लाम को पाना असल में अल्लाह तआला की तरफ़ से ही हिदायत है जो मुझे ख़लीफ़-ए-वक़्त को देखने के बाद हासिल हुआ है। इस तरह जलसा को ज़िंदगी में पहली बार देखना और बैअत के रूह-परवर मुनाज़िर को देखना इस से मैं इस में शामिल होने के बाद अपने अंदर एक तबदीली महसूस कर रहा हूँ जैसे एक नई ज़िंदगी हासिल हो गई हो।

अल्बानिया के पल्लूओमब बैया (pellumb beja) साहिब जर्मनी में हिस्ट्री के टीचर हैं। उन्होंने तीन चार साल पहले बैअत की थी। कहते हैं कि इस साल जलसा सालाना यू.के में शमूलीयत वर्चोयली (virtually) थी लेकिन मुझे ऐसे लग रहा था कि गोया में बज़ात-ए-ख़ुद इस में शामिल था। जलसा का माहौल और ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़िताब का असर इतना ज़बरदस्त था कि मुझे लगा कि मैं भी जस्मानी तौर पर जलसा में शामिल हूँ।

यह आलमी जलसा सालाना इस बात का मुँह बोलता सबूत है कि जमाअत में इत्तहाद है। सारी दुनिया के अहमदी एक ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ पर जमा हैं। समस्त अहमदी अहबाब अपने फ़रायज़ को समझना चाहते हैं। और कहते हैं समस्त लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त की हिदायात सुनने के मुंतज़िर हैं और उन पर अमल करने की ख़ाहिश रखते हैं। कहते हैं कि अपने इख़तेतामी ख़िताब में निहायत सादा शब्दों में हमें निहायत वाज़ेह हिदायात दी हैं और ये अलफ़ाज़ जो हैं ऐसे थे जो सोसाइटी का हर वर्ग बाआसानी समझ सकता है। यह ख़िताब हमें अपनी ज़िम्मेदारियों के सामने खड़ा कर देता है। बिलख़सूस हमें, जो अल्बानियन सोसाइटी में रहते हैं, जहां पर औरतों के हुक़ूक़ के मुआमले में बहुत से मसायल हैं।

फिर नाईजेरिया के रीजन गुडां रूमजी (guidan roumji) की एक महिला कहती हैं कि आज लजना का ख़िताब सुनकर मुझे औरतों के हुक़ूक़ और औरतों की ज़िम्मेदारियों का हक़ीक़ी इदराक हुआ है और कहती हैं कि जब आपने हज़रत अम्मां जान का बताया कि किस तरह वह अपने बच्चों का ख़्याल रखती थीं और उनकी मिसाली तर्बीयत करती थीं तो मैंने उसी वक़्त अह्द किया कि आज से मैं भी अपने बच्चों की तर्बीयत पर ख़ुसूसी तवज्जा दूंगी ताकि वे मिसाली ख़ादिम-ए-दीन बन सकें।

देखें किस तरह अल्लाह तआला तबदीलीयां पैदा कर रहा है।

आतिफ़ ज़ाहिद साहिब मुरब्बी सिलसिला एडीलेड हैं। ये लिखते हैं कि एडीलेड के वक़्त का लंदन से साढ़े आठ घंटे का फ़र्क़ है। जलसा के समस्त प्रोग्राम रात देर से यहां नशर होने थे। फ़िक्र थी कि लोग नहीं आएँगे, हाज़िरी अच्छी नहीं होगी लेकिन लोगों की तरफ़ से ग़ैरमामूली इख़लास का मुज़ाहरा हुआ और working day होने के बावजूद मस्जिद में लोग तशरीफ़ लाए, ख़िताब सुना, आलमी बैअत के वक़्त भी लोग मौजूद थे। रात तीन बजे तक जाग कर उन्होंने इख़तेतामी ख़िताब सुना और सबकी ख़िलाफ़त से जो मुहब्बत थी वह देखने योग्य थी और इस बात पर एम. टी. ए. के भी शुक्रगुज़ार हैं।

कज़ाखिस्तान से गुलआई मकी साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना ख़ुदा के फ़ज़ल से कामयाबी से इख़तेताम पज़ीर हुआ। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर ख़लीफ़-ए-वक़्त और अन्य वक्ताओं की तक़ारीर बहुत ही मुफ़ीद और दिलचस्प थीं। इन तक़ारीर ने मेरे दिल पर एक ख़ास असर किया और मैंने तब्लीग़ करने के तरीक़े भी सीखे। मुझे यक़ीन है कि इस तरह दीगर श्रोताओं को भी अपने सवालात के जवाबात मिल गए होंगे। इसी तरह अल्लाह तआला ने मुझे तजदीद-ए-बैअत की तौफ़ीक़ अता की। अल्लाह तआला लोगों के दिल और आँखें खोले और वे हिदायत को क़बूल करने वाले बनें।

यमन से शीमा क़ासिम साहिबा कहती हैं। हमने जलसा की कार्रवाई देखी। ऐसा लगता था कि हम जन्नत में हैं। इस्लाम का सूरज हम पर दुबारा तलूअ हुआ है और हमारे दिलों और रूह को ताज़गी बख़शी है। हम में हक़ीक़ी ईमान और मुहब्बत और वहदत और अख़लाक़ की रूह फूंकी गई है। हम आपसे दूर थे लेकिन हमारे दिल आपके साथ थे। हम एक ही घर में मौजूद थे। एक अहमदी के सिवा कोई और इस ताल्लुक़ को महसूस नहीं कर सकता। हमारे मुल्क में मूसलाधार बारिशों के बावजूद जलसा के तीनों दिन मौसम ठीक रहा और अल्लाह के फ़ज़ल से हमने जलसा की सारी कार्रवाई देखी। मौला करीम ख़िलाफ़त को दवाम बख़्शे। इसके बग़ैर न हमारा कोई वजूद है न कोई मक़सद।

फिर कबाबीर से एक और अरब महिला दुआ साहिबा हैं। कहती हैं कि आपके ख़िताब के नोटिस लिखने की कोशिश करती रही। इख़तेतामी ख़िताब में जो ख़वातीन के हुक़ूक़ की तरफ़ तवज्जा दिलाई थी उसकी वजह से बहुत धन्यवादी हूँ। मैं इस मज़हब की अनुयायी हूँ जो मेरे हुक़ूक़ और एहसासात की हिफ़ाज़त करता है। मुझे इन समस्त बातों को अपनी ग़ैर मुस्लिम सहेलियों के सामने दोहराने में गर्व महसूस होता है।

फिर औरत के नुक्ता निगाह से भी आपने मर्दों के हुक़ूक़ के बारे में हमें बताया जिससे मुझे अंदाज़ा हुआ कि क्या में अपने पिता साहिब, भाईयों और शौहर के हुक़ूक़ अच्छी तरह अदा करती हूँ या नहीं। बैअत के वक़्त मुझे एहसास था कि हम हक़ीक़त में ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ हैं और हमारे दरमयान न कोई मुल्क और न कोई समुंद्र है। मैं इस क़दर ख़ुशी महसूस कर रही थी कि मुझे लग रहा था कि मेरा दिल फट जाएगा।

अरदन से एक महिला अमलशाफ़ी साहिबा लिखती हैं कि मैंने आपका जलसा सालाना का पहले रोज़ का ख़िताब सुना। मेरा जिस्म अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करके काँप के रह गया। दूसरे रोज़ के प्रोग्राम में वग़ाअनदा नामी बस्ती के अहमदियों की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुहब्बत को देखा। जबकि यह बस्ती निहायत पसमांदा है और इसके बासी अभी तक ज़िंदगी की इबतेदाई ज़रूरीयात से भी महरूम हैं, फिर भी इस बस्ती के एक सरकरदा की बात सुनकर मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए। वह कह रहा था कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुहब्बत करता है। यह बज़ाहिर बहुत सादा से अलफ़ाज़ थे लेकिन इस का मेरे दिल-ए-पर बहुत असर हुआ।

फिर मिस्र की मर्वा अब्दुल्लाह साहिबा हैं। कहती हैं अमीरुल मोमनीन आपने हमारे दिलों को अपनी तक़रीरों और अन्य वक्ताओं की तक़ारीर से रुहानी दौलत से माला-माल कर दिया है। मैं इस दौरान आसमानी रूहानियत पर उड़ने लगी और अपने रब की मुलाक़ात के लिए बेचैन हो गई। मेरी तमन्ना है कि इस रूहे मुतमइन्ना के दर्जा तक पहुँचूँ जिसका आपने ज़िक्र किया। दिल चाहता है कि मैं ख़ुदा की मुहब्बत और इस के मिलाप के शौक़ में ऐसी गुम हो जाऊं कि आस-पास की ख़बर न रहे। मेरा जिस्म तो बेशक लोगों के सामने मौजूद हो लेकिन मेरी रूह ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के आसमान में गुम हो उड़ जाए।

अरबों में एक ख़ास मलिका है। अलफ़ाज़ बड़े अच्छे प्रयोग करते हैं और उनको इख़लास-ओ-वफ़ा का बड़ा इज़हार करना आता है। अल्लाह तआला उनके ईमान-ओ-ईक़ान में तरक़्क़ी दे।

फिर मलाईशीया के एक नवम्बाइअ दोस्त अज़ग़ान (अलिफnazlan azgan) साहिब हैं। बड़े सादा से इन्सान हैं। बड़ी सादा ज़िंदगी गुज़ारने वाले हैं और माली

हालात भी अच्छे नहीं। उनके पास कुछ भी रक़म इंटरनैट पर जलसा देखने के लिए नहीं थी। उन्होंने अपने घर के सामने एक दरख़्त से आम तोड़े और आमों को बेचा और फिर कहते हैं कि वहां जाके बेच कर जो रक़म आई इस से उन्होंने इंटरनैट डैटा (अलिफdata)ख़रीदा और फिर जलसा की कार्रवाई सुनी।

गिनी बसाऊ के एक ग़ैर अहमदी दोस्त आसीनी बालडे साहिब ने जलसा की कार्रवाई सुनी। वो कहते हैं मैंने आज तक कभी ऐसा प्रोग्राम नहीं देखा जिसमें लोग अपने लीडर को इतने प्यार और एहतिराम से सुनते हूँ। और आलमी बैअत के मुनाज़िर बहुत ख़ूबसूरत थे, उन्होंने सिर्फ आलमी बैअत का नज़ारा देखा था ,जिसमें पूरी जमात एक हाथ पर इकट्ठी थी। मुझे ये मुनाज़िर देखकर यक़ीन हो गया है कि अहमदिया जमात अपने ख़लीफ़ा की मुकम्मल इताअत करती है और यही उनकी तरक़्क़ी का राज़ है और हक़ीक़त में अहमदिया जमात एक सच्ची जमात है और आप लोग सच्चे रस्ते पर हैं।

मैक्सीको से गोमेज़ (gomez) साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना यूके के ख़ताबात सुनने का अवसर मिला। इख़ततामी ख़िताब सबसे दिलचस्प लगा जिसमें औरतों के हुक़ूक़ का ज़िक्र किया गया था और किस तरह घर के माहौल को बेहतर बनाया जा सकता है। ये ऐसी इस्लामी तालीमात हैं जिन पर मैं ख़ुद अपनी ज़िंदगी में अमल करने की कोशिश करूँगी। इस के इलावा बैअत की तक़रीब से बहुत जज़बाती हो गई थी। एक ऐसी कैफ़ीयत थी जिसको मैं अलफ़ाज़ में बयान नहीं कर सकती मगर में बड़ी ख़ुशी और सकेंत महसूस कर रही थी।

गिनी बसाऊ की एक नवम्बायअह महिला हैं। वो अपनी एक ग़ैर अज़ जमात महिला ज़ेब अलनिसा-ए-को जलसा के लिए लेकर आएं और कहती हैं कि जलसा के तीनों दिनों के समस्त प्रोग्रामों में खासतौर पर आपके समस्त ख़ताबात सुने और आख़िरी दिन मस्जिद में इस महिला ने जो ग़ैर अज़ जमात थी ऐलान किया कि मेरे जमात अहमदिया के बारे में बहुत से एतराज़ात थे मगर आपके ख़लीफ़ा के ख़ताबात सुनकर समस्त एतराज़ात ख़त्म हो गए हैं और मैं अहमदियत में शामिल होने का ऐलान करती हूँ और में अपने बेटे को भी जमात अहमदिया के लिए वक़्फ़ करती हूँ।

गिनी बसाओके एक गांव की रहने वाली महिला कुम्बा कैटा साहिबा हैं। जलसा यूके के प्रोग्राम में शामिल हुईं। आलमी बैअत के बारे में सुना तो मुअल्लिम से इस की तफ़सील पूछी। मुअल्लिम साहिब ने दस शराइत-ए-बैअत के बारे में बताया। चुनांचे ये महिला बैअत की तक़रीब में शामिल हुईं। बैअत के समस्त अलफ़ाज़ दोहराए और इख़ततामी ख़िताब भी सुना। आख़िर पर कहने लगीं कि मैंने अहमदियत तो उसी वक़्त क़बूल कर ली थी जब आलमी बैअत हुई थी मगर अब इस ख़िताब के बाद ऐलान करना चाहती हूँ कि इस वक़्त अगर उम्मत मुस्लिमा को कोई बच्चा सकता है तो ख़िलाफ़त अहमदिया ही है और आज मैं अहमदियत में शामिल होने का ऐलान करती होनावर अपने बच्चों को भी अहमदियत क़बूल करने की नसीहत करूँगी क्योंकि अहमदियत ही हक़ीक़ी इस्लाम है।

फिर कोंगो बराज़ा वैल में मुख़्तलिफ़ जमातों के मिशनरी लिखते हैं कि इजतिमाई तौर पर जलसा की समस्त नशरियात बज़रीया एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा लाईव देखने की तौफ़ीक़ मिली और जो ख़ताबात थे इस से बहुत लोग मुतास्सिर हुए और अल्लाह के फ़ज़ल से उन ख़ताबात को सुनने की वजह से जलसा की कार्रवाई को सुनने की से 23 अफ़राद को इन दिनों में बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली।

कोंगो बराज़ा वेल से मिस्टर मबूओरअबिन जीmboura Ben jeli) साहिब कूजन का ताल्लुक़ ईसाईयत से है जलसा में मदऊ किया गया था। दो दिन उन्होंने जलसा की कार्रवाई सुनी। कहते हैं कि मैं यहां पर दो दिन से हुक़ूक़ अल्लाह, हुक़ूक़ उल-ईबाद, तक़्वा और इस्तिग़फ़ार के बारे में बातें सन रहा हूँ जो मेरे दिल में घर कर रही हैं और अपने अंदर एक तबदीली महसूस कर रहा हूँ जबकि चर्च में सिवाए जादू टोने या बदरूहों को निकालने के और उन्हें कुछ भी नहीं बताया जाता। मैंने फ़ैसला किया है कि मैं आपकी जमात में शामिल हो जाऊं क्योंकि यहां ही मुझे रुहानी सुकून मयस्सर आया है। चुनांचे वो बैअत कर के जमात में शामिल हो गए।

बुर्कीना फासो से नौ मुस्लिम दोस्त नी बीgnisse bessa) साहिब कहते हैं कि ख़लीफ़ उल-मसीह को बराह-ए-रास्त देखने का ये मेरा पहला तजुर्बा है। मैं इस्लाम में नया दाख़िल हुआ हूँ और मेरे ज़हन में हमेशा ये सवाल आता था कि दुनिया को लाज़िमी तौर पर एक लीडर के हाथ पर मुत्तहिद होना चाहिए। अब यहां जमात अहमदिया के लोगों को देखा तो वो इत्तिहाद नज़र आता है इसलिए मैंने उनके साथ अहमदिया मस्जिद में नमाज़ें पढ़नी शुरू कर दें और आज मैं जलसा सालाना यूके और आलमी बैअत में शामिल हुआ हूँ जिसमें समस्त अहमदी एम. टी. ए. के ज़रीया से शामिल थे। जब मैंने ये सब अपनी आँखों से देख लिया तो मैं मुतमइन हो गया और वो बात जो मैं हरवक़त सोचता था कि सब एक हाथ पर मुत्तहिद हूँ वो भी मैंने देख ली और मेरे इस सवाल का जवाब मिल गया। इसलिए आज से मैं अहमदियत क़बूल करने का ऐलान करता हूँ और में अपने ख़ानदान को भी ख़िलाफ़त के पीछे चलने का कहूँगा।

श्रीलंका के सदर जमात क़बूलीयत अहमदियत के बारे में लिखते हैं कि मुक़ामी जमातों में इजतिमाई तौर पर जलसा सुनने का इंतिज़ाम किया गया था। कोलंबो में जमाती सैंटर में मुल्की हालात के पेश-ए-नज़र आमद-ओ-रफ़त की शदीद मुश्किलात के बावजूद पचासी अहमदी और ग़ैर अहमदी अफ़राद जलसा और आलमी बैअत के प्रोग्राम में शामिल हुए। इस अवसर पर दो अहबाब बैअत कर के जमात में शामिल हुए। इसी तरह लाईव स्ट्रीमिंग के ज़रीया नवगम्बो, पस और पौलवंर में अहबाब जमात इजतिमाई तौर पर जलसा में शामिल हुए और सारे प्रोग्रामों का ताम्मुल ज़बान में अनुवाद भी किया गया। इन प्रोग्रामों के नतीजा में चार अहबाब को क़बूल अहमदियत की तौफ़ीक़ मिली।

अल्बानिया के बारे में रिपोर्ट है कि वहां लाईव अनुवाद यूट्यूब पर नशर हो रहा था जो अल्बानिया, कोसोवो, मक़दूनिया, जर्मनी वग़ैरा में अल्बानियन लोग सन रहे थे। एक ज़ेरे तब्लीग़ अल्बानियन मुस्लमान इल्बर्ट (लाalbert) साहिब पहली मर्तबा जलसा सालाना यूके के इख़ततामी सैशन में शामिल हुए। जलसा ख़त्म होने के बाद कहने लगे कि ख़लीफ़ उल-मसीह का ख़िताब क़ुरआन-ए-मजीद की आयत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत और अकली दलायल से लैस है लेकिन निहायत ही सादा ज़बान में था। जो लोग औरतों के हुक़ूक़ के बारे में एतराज़ करते हैं उनके समस्त सवालात के जवाबात भी आज उन्होंने अपने ख़िताब में बयान कर दिए। वापिस जाने के थोड़ी ही देर के बाद दुबारा उनका फ़ोन आया और जमात अहमदिया और जलसा के बारे में अपने जज़बात का इज़हार करते रहे। कहने लगे कि जमात अहमदिया ही हक़ीक़ी इस्लाम है। जब शराइत-ए-बैअत का ज़िक्र हुआ तो जमात की एक अल्बानियन किताब का हवाला देते हुए कहा कि इस में दस शराइत बैअत दर्ज हैं और मैंने पढ़ ली हैं और अब मैं बैअत करने के लिए तैयार हूँ। चुनांचे वो जमात में शामिल हो गए।

कोंगो बराज़ा वेल के मुअल्लिम ने लिखा है कि एक महिला बययूओकूओ सिटी (ओbiyoko stevie) का ख़ावंद पहले ही अहमदियत क़बूल कर चुका था और इस की ख़ाहिश थी कि बीवी भी इस्लाम क़बूल कर ले। तब्लीग़ भी कर रहा था। दुआ भी करता था लेकिन बीवी चर्च को छोड़ने को तैयार नहीं थी। जलसा सालाना देखने के लिए दावत दी गई। तीनों दिन जलसा की कार्रवाई उन्होंने देखी और जलसा के आख़िरी दिन इस महिला ने कहा कि मैं तीन दिन से अपने पादरी और आपके ख़लीफ़ा की बातों को ओcompareकर रही थी। मैं इस नज़रिए पर पहुंची हूँ कि ख़लीफ़ा की बातों में बहुत वज़न है और हर बात दिल में उतर रही थी जबकि पादरी की बातें हम रोज़ाना सुनते हैं लेकिन कभी भी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि इस की बातों ने हमारे दिल-ए-पर असर क्या हो। चुनांचे बैअत कर के जमात में शामिल हो गई।

ये लोगों के चंद वाक़ियात थे जो मैं ने बताए हैं। जलसा के अवसर पर जैसा कि आप लोगों ने जलसा की कार्रवाई के दौरान देखा था कि नुमायां शख़्सियात की तरफ़ से बहुत सारे पैग़ामात मिले।126पैग़ामात दुनिया-भर के मुख़्तलिफ़ सियासतदानों और लीडरों की तरफ़ से मिले।101उनमें से वीडीयो थे और25तहरीरी पैग़ाम थे। वुज़रा और ऐम पेज के पैग़ाम थे। यूके के इलावा दूसरे मुल्कों से जिन लोगों ने पैग़ाम भिजवाए उनमें अमरीका, कैनेडा, सीरालियून , योगंडा ,लाइबेरिया, न्यूज़ीलैंड, स्पेन और हॉलैंड शामिल थे। लाईव स्ट्रीमिंग का जो इंतिज़ाम था वो53देशों में था उस के ज़रीया तर्पण देशों के लोग यूके जलसा में शामिल हुए और यूरोप में भी, अफ़्रीक़ा में भी, एशिया में भी और उन तर्पण मुल्कों में इसी मुक़ामात थे जहां के लोग शामिल हुए।

प्रैस और मीडीया की जो कवरेज है इस साल को वुड की वजह से आम तौर पर दावत नहीं दी गई थी लेकिन दो मीडीया आउट लुट्स ने ख़ास तौर पर दरख़ास्त कर के आने की इजाज़त ली। चुनांचे उनको इजाज़त दी गई और प्रैस सैक्शन का ख़्याल था कि इस दफ़ा बड़ा चैलिंजिंग हैकि किस तरह हमजलसा सालाना के बारे में दुनिया को बताएँगे लेकिन अल्लाह तआला ने इस तरह इंतिज़ाम किया कि ख़ुद ही कवरेज के सामान पैदा कर दिए। और दो मीडीया वाले, बी-बी सी वाले और एक और चैनल वाले तो आए भी थे। इसके इलावा बी-बी सी, आई टीवी, मेट्रो, एल्बी सी, बी-बी सी रेडीयो सिरे, बी-बी सी साउथ टूडे , बी-बी सी न्यूज़ वेबसाइट वग़ैरा ने बड़ी कवरेज दी और इसी को लेकर फिर दूसरे मीडीया ने भी दिया। इस तरह रीजनल सतह पर भी आठ मीडीया आउट लुट्स ने जलसा को कवर किया। इस के इलावा अट्ठाईस

वैबसाईटस ने जलसा के हवाले से ख़बरें या आर्टीकल शाय किए। इन वैबसाईटस की पहुंच बीस मिलियन से ज़ाइद लोगों तक है। प्रिंट मीडीया में देखा जाये तो अख़बारात में जलसा के हवाले से चौदह आर्टीकल शाय हुए और उन अख़बारात को पढ़ने वालों संख्या 1.2मिलियन है। मुख़्तलिफ़ टीवी चैनल्ज़ पर बत्तीस प्रोग्रामों में जलसा सालाना को कवर किया गया। इन टीवी चैनल्ज़ को देखने वालों की संख्या बारह मिलियन से ज़ाइद है। रेडीयो स्टेशनज़ पर तेंतीस प्रोग्रामों में जलसा सालाना यू.के का वर्णन हुआ। इन रेडीयो स्टेशनज़ को सुनने वालों की संख्या एक मिलियन से ज़ायद है। सोशल मीडीया के ज़रीया से बाअज़ मीडीया आउट लुट्स, सहाफ़ी हज़रात और पब्लिक फ़िगरज़ ने जलसा के हवाले से मैसिज इत्यादि दिए जिनकी पहुंच 12 मिलियन से अधिक अफ़राद तक है। प्रैस ऐंड मीडीया की टीम ने वीडीयो बना कर भी सोशल मीडीया पर डालें जिनकी पहुंच दो लाख चौंतीस हज़ार अफ़राद से ज़ायद थी। इन समस्त को 57.5 मिलियन से ज़ायद अफ़राद तक जलसा की कवरेज हुई।

जर्नलिस्ट्स को आने की क्योंकि इजाज़त नहीं थी और प्रैस मीडीया की टीम ने यू.के जमाअत के तब्लीग़ी डिपार्टमैंट के सहयोग से 32 जर्नलिस्ट्स को लंगर का खाना भिजवाया और इसका भी उन्होंने बड़ा मुसबत जवाब दिया, बड़ा appreciate किया। बी-बी सी साउथ के नुमाइंदा जर्नलिस्ट ऐडवर्ड सालट (edward sault) ने कहा कि मैंने जलसा में बहुत अच्छा वक़्त गुज़ारा। मेहमान-नवाज़ी बहुत उम्दा थी। मुख़्तलिफ़ तक़ारीर सुनकर भी बहुत अच्छा लगा। आइन्दा भी आप लोगों के साथ काम करूँगा। जर्नलिस्ट tevy nitha ने कहा आपकी जमाअत की फ़राख़-दिली देखकर मैं हैरान रह गई। एक सहाफ़ी नताशा देवन (natasha devon) ने कहा असल में तो समस्त मज़ाहिब यकसाँ हैं। अच्छे लोग मज़हब को लोगों को इकट्ठा करने के लिए और ग़रीबों की मदद के लिए प्रयोग करते हैं जबकि बुरे लोग मज़हब को बुरे कामों के लिए प्रयोग करते हैं और जलसा सालाना निसंदेह अच्छे लोगों की मिसाल है।

एम. टी. ए. की जानिब से जलसा सालाना के हवाले से 1885 पोस्ट्स, तसावीर और वीडीयोज़ सोशल मीडीया पर अपलोड की गईं। इस के ज़रीया चार मिलियन अफ़राद तक यह ख़बर पहुंची। दो लाख तेराह हज़ार अफ़राद ने इन पोस्ट्स को लाइक किया। सोशल मीडीया पर उन पर तबसरे हुए। 1236 वीडीयोज़ अपलोड की गईं जिनको दो लाख इकत्तीस हज़ार अफ़राद ने देखा और उन देखने वालों के कुल वक़्त का हिसाब लगाया जाए तो चार लाख सत्तर हज़ार घंटे बनते हैं। एम. टी. ए. की वेबसाइट को चौबीस हज़ार लोगों ने बानवे हज़ार मर्तबा देखा।

एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा की रिपोर्ट यह है कि बीस टीवी चैनल्ज़ पर जलसा सालाना की नशरियात बराह-ए-रस्त दिखाई गईं। उनमें से बाअज़ हुकूमती चैनल्ज़ और बाअज़ निजी चैनल्ज़ थे। बाअज़ चैनल्ज़ ऐसे थे जो पूरे मुल्क में देखे जाते हैं। इन चैनल्ज़ में गेम्बया नैशनल टी.वी, सीरालियून नैशनल टी.वी, लाइबेरिया नैशनल टी.वी और असंख्य प्राईवेट चैनल्ज़ शामिल हैं। आलमी बैअत की तक़रीबात भी उनमें दिखाई गईं। बीस टी.वी चैनल्ज़ के ज़रीया मेरे जो ख़ताबात थे उनको दिखाया गया और पैंतीस मिलियन अफ़राद तक ये पहुंचे।

जलसा की लाईव कवरेज के इलावा जलसा के हवाले से न्यूज़ आइटम तैयार करके अफ़्रीक़ा भर में भिजवाए गए थे। इसलिए जलसा के तीनों दिन में पंद्रह चैनल्ज़ ने जलसा सालाना के हवाले से न्यूज़ चलाए जिनकी पहुंच पंद्रह मिलियन अफ़राद तक है।

रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के ज़रीया से भी काफ़ी कवरेज हुई। सोशल मीडीया के ज़रीया से और यूट्यूब के ज़रीया से उनकी कवरेज हुई है। जलसा के हवाले से चालीस आर्टीकल गए। 12 वीडीयोज़ बनाई गईं। 110से ज़ायद पोस्ट्स डाली गईं। तीन लाख अफ़राद तक जलसा की कवरेज पहुंची।

अतः अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसा के बेशुमार फल हैं जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाए। आए हुए वाक़ियात जो हैं और जो तास्सुरात हैं जैसा कि मैंने कहा उनमें से चंद मिसालें मैंने पेश की हैं। अल्लाह तआला हर अहमदी के ईमान-ओ-ईक़ान में तरक़्क़ी दे और जलसा के असरात दाइमी हों और वक़्ती न हों।

नमाज़ के बाद में कुछ जनाज़े भी पढ़ाऊंगा मरहूमीन का वर्णन कर दूं। पहला वर्णन है श्रीमती नुसरत क़ुदरत सुल्ताना साहिबा का जो माननीय क़ुदरत उल्लाह अदनान साहिब कैनेडा की पत्नी थीं।पिछले दिनों उनकी वफ़ात पचपन साल की उम्र में हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा नमाज़ों की पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, एक नेक मुख़लिस और फ़िरिश्तासिफ़त महिला थीं। हस्पताल में थीं तो कोई ऐसा डाक्टर नहीं छोड़ा जिसको तब्लीग़ न की हो। एक मुस्लमान अरब डाक्टर भी थी जो नुसरत साहिबा से क़ुरआन सुनने के लिए आती थींऔर आप उन्हें सूरा-ए-यासीन पढ़ कर सुनाती थीं। हर बात में ख़िलाफ़त का वर्णन करतीं। ख़िलाफ़त से बड़ा वफ़ा का ताल्लुक़ था। बहुत सारे रिश्तेदार उनके ग़ैर अहमदी सुन्नी हैं। इन सबको पैग़ाम भेजा, तब्लीग़ की कि आप लोग भी इमाम वक़्त की बैअत कर लें। पीछे रहने वालों में मियां के इलावा तीन बच्चे हैं। उनका एक बेटा रज़ी नोमान जो है वह जामिआ अहमदिया कैनेडा के तालिब-ए-इलम हैं और एक उस का भाई है और एक बहन है। उनके मियां कहते हैं कि मेरी पत्नी ने एक वाक़िफ़ ज़िंदगी की तरह ज़िंदगी गुज़ारी। तर्बीयत औलाद पर अपनी सारी ताक़त और कोशिश सिर्फ की। ख़िलाफ़त से बहुत ज़्यादा मुहब्बत और अक़ीदत थी। तब्लीग़ का तो बड़ा शौक़ था जैसा कि मैंने कहा अपने बच्चों में भी यह शौक़ पैदा किया है और मैं ने उनमें देखा है कि सब बच्चे ही तब्लीग़ का शौक़ रखते हैं और ग़ैरमामूली शौक़ रखते हैं, मामूली शौक़ नहीं है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उनकी बच्चों को एक ख़ास तर्बीयत है और उनको पढ़ने का भी शौक़ है। अल्लाह तआला ने मलिका दिया। उनके ज़रीया से बैअतें भी होती हैं। एक लड़का रज़ी नोमान जैसा कि मैंने कहा जामिआ में भी है, बड़ा अच्छा काम कर रहा है। अल्लाह तआला उसको आइन्दा भी और बाक़ी बच्चों को भी बेनफ़्स हो कर दीन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ दे और उन सब बच्चों को अपनी माँ की दुआओं का वारिस बनाए। उनके बेटे जरी उल्लाह अदनान कहते हैं कि वालिदा बहुत नेक, परहेज़गार, मुत्तक़ी और मिसाली अहमदी महिला थीं। अल्लाह तआला के साथ उनका ख़ास ताल्लुक़ था। बच्चों की तर्बीयत की बहुत फ़िक्र रहती थी और हर-आन अल्लाह तआला की तरफ़ उनकी नज़र रहती थी। यतीमों का बहुत ख़्याल रखती थीं। बचपन से ही ख़ुदा तआला पर पुख़्ता ईमान था। उनको कैंसर की बिमारी थी। जब उसकी तशख़ीस हुई तो उस वक़्त भी अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी थीं बल्कि हमें कहती थीं कि तुम लोगों को मज़बूत होना चाहिए और अल्लाह तआला पर तुम्हारा ईमान ज़्यादा मज़बूत होना चाहिए। अपने डाक्टर को भी कहतीं कि ज़िंदगी और मौत तो कोई बड़ी बात नहीं है बल्कि असल चीज़ यह है कि इन्सान अपनी ज़िंदगी इस तरह गुज़ारे कि हर कोई इस से ख़ुश हो और वे ख़ुद भी अपने आमाल से मुतमइन हो अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा जिसका वर्णन करूँगा, वह मुहतरम चौधरी लतीफ़ अहमद झम्मट साहिब का है पिछले दिनों में उनकी उनासी 79 साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा हज़रत चौधरी मुहम्मद दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु वासिल बाक़ी नवीस के ज़रीया हुआ जिनका नाम अंजाम-ए-आथम रुहानी ख़ज़ायन जलद ग्यारह पृष्ठ 325 में तीन सौ तेराह अस्हाब की फ़हरिस्त में तीसरे नंबर पर मियां मुहम्मद दीन पटवारी बुलानी ज़िला गुजरात लिखा है। चौधरी लतीफ़ झम्मट साहिब ने 66 ई. में पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर से ऐम.एस.सी रियाज़ी की डिग्री हासिल की। विभाग तालीम से सम्बन्धित हो गए। 1966 ई. से 68 ई. तक तालीमुल इस्लाम कॉलेज रब्वाह में बतौर लेक्चरर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इसी तरह 68 ई. से 94 ई. तक कम-ओ-बेश छब्बीस साल तक आपने सीरालियून में तदरीस के विभाग में बतौर उस्ताद और प्रिंसिपल निहायत ख़ुश-उस्लूबी से फ़रायज़ सरअंजाम दिए। वाकिफ-ए-ज़िंदगी थे। अफ़्रीक़ा से वापसी पर आपने तक़रीबन पाँच साल बतौर नायब वकीलुल माल सानी और सात साल बतौर नायब वकीलुल माल सालिस ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई।

सीरालियून में जमाअती स्कूल में तदरीस के फ़रायज़ अंजाम दिए जैसा कि मैंने और 1971 ई. में उन्होंने बाक़ायदा तौर पर ज़िंदगी वक़्फ़ की थी। यक्म जनवरी 2007 ई. को उनका तक़र्रुर बतौर वकीलुल माल सालिस हुआ। इस तरह कुल ख़िदमत का समय उनका आधी सदी से ज़ायद बनता है। उनकी पत्नी रशीदा लतीफ़ साहिबा कहती हैं कि मेरे पति सीरालियून में थे और मैं शादी हो कर वहां गई तो वहां जाते ही उन्होंने मुझे नसीहत की कि एक वाकिफ-ए-ज़िंदगी के लिए यहां एशियाई चीज़ें ख़रीद कर खाना मुश्किल है। वाक़िफ़ ज़िंदगी और उसकी पत्नी को मुक़ामी खाने खाने चाहिऐं। इसलिए तुम मुक़ामी खाने बनाने सीख लो जिसकी वजह से हमें बाद में बहुत आसानी रही। बहुत सादा-मिज़ाज थे। बहुत ख़्याल रखने वाले थे। उनके अपने साथ काम करने वाले जो थे वे भी उनके हुस्न-ए-सुलूक का बहुत वर्णन करते हैं। हर एक उनकी तारीफ़ करता है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद करे, उनके परिजनों को सब्र दे। एक बच्चा तो उनका बचपन में ही फ़ौत हो गया था। उनका एक बेटा और एक बेटी हैं। उनको भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तीसरा वर्णन मुश्ताक़ अहमद आलिम साहिब इब्न माननीय मुहम्मद आलम साहिब मरहूम मीरा भड़का मीरपुर आज़ाद कश्मीर का है। 19 जुलाई 2022 ई. को

साठ साल की उम्र में यह वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी अज़मत बी-बी के इलावा छः बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। तीन बेटे, एक दामाद हाफ़िज़-ए-क़ुरआन हैं। तीन बेटे मुरब्बी हैं। उनमें से एक हाफ़िज़ मुसव्विर अहमद मुज़म्मिल मग़रिबी अफ़्रीक़ा सेनेगाल में हैं और दूसरे बेटे हाफ़िज़ अख़लाक़ अहमद हैं। तीसरे बेटे अबदुल ख़ालिक़ साहिब हैं जो आरक्योलोजी में विशेषज्ञता: कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और मरहूम से रहम का सुलूक फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

अलैहिस्सलाम की मार्फ़त दी गई। परन्तु बाद में उनकी तौबा की वजह से उसे बदल दिया (यूनुस :10)

यह आम क़ानून अंज़ारी पेशगोइयों से सम्बन्धित है कि अगर मुख़ालफ़ तौबा कर लें तो मुक़द्दर अज़ाब को रोक दिया जाता है। हाँ वादा की ख़बर ज़रूर पूरी हो कर रहती है। परन्तु उसके मुताल्लक़ भी अल्लाह की सुन्नत यह है कि अगर वह क़ौम जिससे वादा हो पूरी क़ुर्बानी से काम न ले या पूरी फ़रमांबर्दारी न दिखाए तो उसके पूरा होने में ताख़ीर कर दी जाती है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब उन्होंने नियमित हज़रत मूसा की ना-फ़रमानी की तो वह अर्ज़-ए-मोयदा जिसमें दाख़िल करने के लिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उने न्हें मिस्र से निकाल कर लाए थे, चालीस साल तक के लिए उसकी फ़तह रोक दी गई।

ऊपर वर्णित क़ानून के मुताबिक़ इंज़ार की पेशगोई जब कभी टलती है तो कुफ़्फ़ार शोर मचा देते हैं कि देखो यह झूठा है। अगर सच्चा होता तो क्यों उसकी बात पूरी न होती। ऐसे ही एतराज़ात वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ किया करते थे। उसके मुताल्लिक़ अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आयात किसी उद्देश्य और मक़सद के लिए नाज़िल होती हैं जब हम देखें कि एक शख़्स ने अपनी इस्लाह कर ली है तो हम उसके मुताल्लिक़ अपने हुक्म को भी बदल देते हैं और उसकी सज़ा मंसूख़ कर देते हैं। इसकी जगह इसके लिए अपनी रहमत का निशान दिखाते हैं। क्योंकि हमारी ग़रज़ सज़ा देना नहीं बल्कि इस्लाह करना होता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ऐसे कई अवसर पेश आए हैं। उदाहरणतः यही कि क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की निसबत फ़रमाता है। لَا يُؤْمِنُوْنَ (बक़रः : 1) लेकिन बाद में उनमें से बहुत से लोग ईमान ले आए। यह अज़ाब की ख़बर थी इस वजह से जिन जिन लोगों ने अल्लाह का डर पैदा कर लिया उनका अज़ाब बदल दिया गया और उनको ईमान अता हो गया।

बज़ाहिर यह मसला बिल्कुल साफ़ है लेकिन हमेशा ही लोग इस बारे में ठोकर खाते हैं और इस की वजह यह है कि लोग बात बदलने को झूठ समझते हैं। जबकि सज़ा को बदलना झूठ नहीं होता। वादा को बदलना झूठ होता है। इसलिए अरबी ज़बान में वादा के बदलने को झूठ कहते हैं। वईद अर्थात अज़ाब की ख़बर को बदलने को झूठ नहीं कहते बल्कि उसे रहम और एहसान कहते हैं। अक़्रब में लिखा है। اَلْخُلْفُ فِي الْوَعْدِ عِنْدَ الْعَرَبِ كَذِبٌ وَفِي الْوَعِيْدِ كَرَمٌ अर्थात वादा का बदलना अरबों के नज़दीक झूठ कहलाता है और वईद अर्थात सज़ा की ख़बर का बदलना शराफ़त और एहसान कहलाता है।

उद्देश्य एक माने तो इस आयत के ये हैं के हम वईद की ख़बरों को कई दफ़ा बदल दिया करते हैं। कुफ़्फ़ार इस पर एतराज़ करते हैं। लेकिन उनका एतराज़ सही नहीं। ऐसा करना हिक्मत के ऐन मुताबिक़ है इस में किसी का हक़ नहीं मारा जाता ताकि एतराज़ के योग्य हो। अनुमानों की रु से इस आयत का ताल्लुक़ उन अंज़ारी आयात से होगा जो पहले वर्णन हो चुकी हैं।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4 पृष्ठ 237 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

इंतेज़ामिया को चाहिए था कि देख लेते कि इतने लोग हैं तो पहले ही इंतेज़ाम करते। यह ज़यााफ़त वालों का काम है। यह रज़ाकार कोई खाने के अवसर पर तो जमा नहीं हो गए थे। आख़िर सुबह से काम कर रहे हैं या वहां मौजूद थे। मेरे ख़्याल में जब पिछले जुमा को मैंने आख़िर में जलसा के हवाले से दुआ के लिए कहा और जो काम करने वाले हैं उनके लिए भी दुआ के लिए कहा तो फ़ौरन एक भावना के साथ और लोगों ने भी अपनी ख़िदमात पेश कीं लेकिन बहरहाल इंतेज़ामिया को चाहिए कि खासतौर पर जो weekends हैं इन पर ख़ास इंतिज़ाम रखा करे। ज़यााफ़त के विभाग को आइन्दा के लिए यह बात नोट करनी चाहिए।

इसी तरह ज़यााफ़त के विभाग का यह भी काम है कि जलसा के दिनों में भी उमूमन बड़ी मिक़दार में खाना तैयार करें। इस साल जो जलसा हो रहा है क्योंकि अंदाज़ा सही नहीं है, कुछ लोगों के तहफ़्फ़ुज़ात हैं कि पता नहीं बिमारी की वजह से लोग आएं कि न आएं, कुछ ख़ौफ़ की वजह से आएं कि न आएं। कुछ का ख़्याल है कि एक अरसा के बाद जलसा हो रहा है इसलिए ज़रूर आएँगे लेकिन उमूमन हमारी इंतेज़ामिया का, खासतौर पर खाने वालों का, ज़यााफ़त का जहां ख़र्च करने का सवाल आता है वह मनफ़ी तरफ़ जाते हैं। बजाय इसके कि वाफ़र मिक़दार में खाना तैयार करें इस उम्मीद पर होते हैं कि कम खाना तैयार करो लोग कम आएँगे। यह बिल्कुल ग़लत चीज़ है।

ज़यााफ़त की ज़िम्मेदारी है कि जो मेहमान आ रहा है उसकी पूरी तरह मेहमानदारी करें।

इसी तरह खाने के बारे में इसी विषय में मैं हिदायत दे दूं कि आजकल गरमियों के दिन हैं तो ज़यााफ़त के विभाग को चाहिए कि जब गोश्त कटवाते हैं तो जिस तरह कटता जाता है थोड़ा-थोड़ा गोश्त फ़ौरी तौर पर चिल्लर (chiller) में चला जाना चाहिए न यह कि सारा दिन पड़ा रहे और ख़राब हो और फिर लोगों को बीमार करे। इसी तरह बाक़ी खाने की भी तसल्ली करनी चाहिए। बहरहाल जो लोग, ख़िदमत के लिए रज़ाकार आए थे जिनका में पहले वर्णन कर रहा था, वे तो ख़िदमत के लिए आए थे। उन्हें खाना मिला या नहीं मिला वह तो ख़ामोशी से चले गए लेकिन इंतेज़ामिया की एक कमी सामने आ गई।

कारकुनों को भी में यह कहना चाहता हूँ कि sजलसा के इन तीन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की इस जज़बा से ख़िदमत करें कि उन्हें हमेशा यह एहसास रहे और दिल में यह रहे कि हमने अपने अफ़िसरों से या किसी मेहमान की तरफ़ से इस ख़िदमत का कोई सिला नहीं लेना

और न हमें सिला मिलना है। बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर इन मेहमानों की ख़िदमत करनी है और इस सहाबी के उस्वा को और उसकी बीवी के उस्वा को सामने रखना है जिसने बच्चों को भी भूखा सुला दिया था और ख़ुद भी भूखे रहे और मेहमान की मेहमान-नवाज़ी का हक़ अदा कर दिया। मेहमान पर यही ज़ाहिर किया रोशनी बुझा कर कि जिस तरह वे भी इसके साथ खाने में शरीक हैं और फिर ख़ुदा तआला ने उनके इस फ़ेअल को इतना सराहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी इसकी ख़बर दी और अगले दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सहाबी से फ़रमाया कि तुम्हारी रात की तदबीर से अर्थात इस मेहमान को खाना खिलाने के लिए जो मुस्लमान की तदबीर थी इस पर अल्लाह तआला भी हसा। अल्लाह तआला इस बात पर बड़ा ख़ुश हुआ और हसा और क़ुरआन-ए-करीम में भी अल्लाह तआला ने ऐसी क़ुर्बानी करने वालों का वर्णन फ़रमाया है।

ये क़ुर्बानी करने वाले हैं जो बेनफ़्स हो कर क़ुर्बानी करते हैं और यही लोग हैं जो सफ़लता पाने वाले हैं।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अनसार باب قول الله ويؤثرون على انفسهم ...الخ، हदीस 3798)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

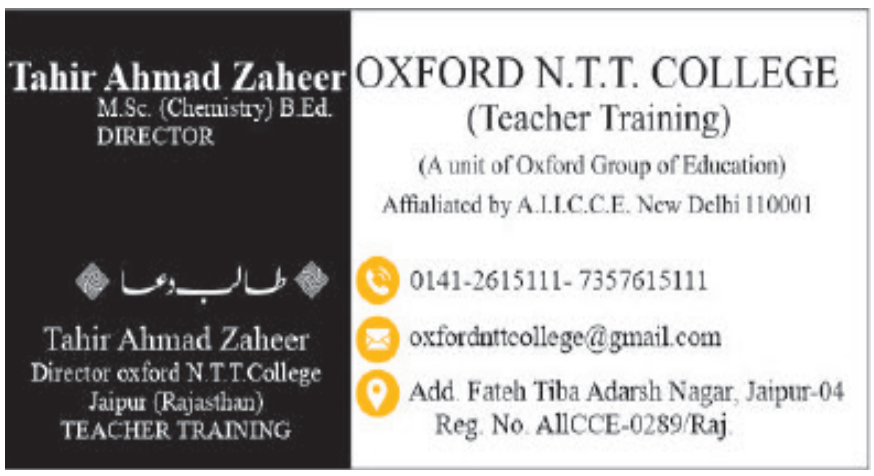

अतः यह थे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़ मेहमान-नवाज़ी करने के, मेहमान की ख़िदमत करने के।

कितने ख़ुश-क़िस्मत हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर मेहमानों की ख़िदमत का हक़ अदा करने की कोशिश करते हैं और फिर मेहमान भी वे जो ज़माने के इमाम के बुलाने पर आए हैं, जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें सुनने के लिए आए हैं, जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की ख़ाहिश लेकर आए हैं।

अतः बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं वे सब रज़ाकार जो दीन की ख़ातिर आने वाले मेहमानों की ख़िदमत अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए कर रहे हैं।

जब बड़ी संख्या में लोग हों तो मुख़्तलिफ़ स्वभाव के लोग भी होते हैं। बाअज़ ज़्यादा गर्म तबीयत के भी होते हैं और बाअज़ दफ़ा सख़्ती से कारकुन से मुख़ातब हो जाते हैं या सख़्ती से किसी चीज़ का मुतालबा करते हैं लेकिन कारकुन का काम है, मर्द कारकुनान का भी, लजना की कारक़नात का भी कि किसी से सख़्ती नहीं करनी। किसी सख़्ती से बोलने वाले का सख़्ती से जवाब नहीं देना बल्कि मुस्कुराते हुए जवाब देना है। अगर ज़रूरत पूरी कर सकते हैं तो ज़रूरत पूरी करें अन्यथा नरमी से, प्यार से माज़रत कर दें या अपने बाला अफ़्सर के पास ले जाएं जो मेहमान का मसला हल कर दे। बाअज़ दफ़ा यह काम बहुत मुश्किल हो जाता है लेकिन ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए यह काम करना चाहिए। अपने जज़्बात को, अपनी ज़बान को क़ाबू में रखना चाहिए। इसी तरह आपस में भी कारकुनान जो हैं अपनी ज़बान को एक दूसरे के लिए नरम रखें। आफ़सरान और निगरान भी अपने मुआवेनीन के साथ नरम ज़बान में गुफ़्तगु करें। अगर किसी से कोई ग़लती हो जाए तो प्यार से समझाएँ। आफ़सरान को भी यह एहसास होना चाहिए कि ये रज़ाकार अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए आए हैं और बावजूद इसके कि किसी ख़ास विभाग के लिए तर्बीयत याफ़ताह नहीं हैं ख़िदमत के जज़्बा से बेनफ़्स हो कर ख़िदमत कर रहे हैं तो उनकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई होनी चाहिए। अल्लाह तआला आपस में भी सबको मिल-जुल कर काम करने की तौफ़ीक़ दे और ये जज़्बा उस वक़्त पैदा होगा जब अफ़िसरों को भी और मुआवनीन को भी इस बात की समझ होगी कि हमने यह ख़िदमत क़ुर्बानी के जज़्बा से करनी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेहमान के ग़लत रवैय्ये पर भी ख़िदमत और क़ुर्बानी का क्या मयार क़ायम फ़रमाया इस बारे में एक रिवायत में आता है कि एक मेहमान जो ग़ैर मुस्लिम था वह आता है तो उसकी खाने से ख़ातिर तवाज़ो की जाती है। उसे बिस्तर रात को सोने के लिए मुहय्या किया जाता है। रात को ज़्यादा खाने की वजह से या किसी वजह से उसका पेट ख़राब हो गया या जान-बूझ कर तंग करने की वजह से उसने यह हरकत की कि वह अपना बिस्तर गंदा करके सुबह सुबह चला गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी इस हरकत का बुरा नहीं मनाया बल्कि पानी मंगवाया और ख़ुद ही उसे धोने लग गए। सहाबा कहते हैं कि बावजूद हमारे कहने के कि आप क्यों तकलीफ़ करते हैं हम ख़ादिम हाज़िर हैं हमें धोने दें, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह मेरा मेहमान था। अतः स्वयं ही यह काम करूँगा।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 295 ऐडीशन 1984 ई.)

(उद्धरित मसनवी मौलवी माअनवी दफ़्तर पंजुम पृष्ठ 20 से 25)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो अल्लाह और यौम आख़िरत पर ईमान लाता है वह अपने मेहमान का एहतेराम करता है।

(सही बुख़ारी, किताब الادب باب من کان یؤمن باللہ...ا لخ हदीस 6018)

अतः हमारे सब रज़ाकारों, कारकुनान, कारकुनात, अफ़्सर या मुआविन सब का फ़र्ज़ है कि जो मेहमान दीन के उद्देश्य से आए हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए आए हैं, उनकी ख़िदमत हम क़ुर्बानी करके भी करेंगे। बुलंद हौसलगी का प्रदर्शन भी हर वक़्त करें। ख़ुश-दिल्ली से चेहरे पर बग़ैर किसी किस्म की नापसंदीदगी के आसार ज़ाहिर किए ख़िदमत करें। यह जज़्बा अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हमारे कारकुनान में बहुत सों में है। मुझे उम्मीद है कि इस भावना से सब कारकुनान काम करेंगे। मुख़्तलिफ़ विभागों के जो आफ़सरान निर्धारित किए गए हैं वे भी हमेशा याद रखें कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उन्हें ख़िदमत का अवसर मिल रहा है वे अफ़्सर बन कर नहीं बल्कि ख़ादिम बन कर अपने फ़रायज़ अदा करें। अपने आला अख़लाक़ के उदाहरण क़ायम करें तो मातहत और मुआवेनीन भी जो हैं वे भी आला अख़लाक़ का प्रदर्शन करेंगे। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेहमानों से हुस्न-ए-सुलूक के बारे में बहुत से अवसरों पर नसाएह फ़रमाई हैं। एक अवसर पर फ़रमाया देखो बहुत से मेहमान आए हुए हैं उनमें से कुछ को तुम जानते हो। कुछ को तुम शनाख़्त करते हो कुछ को नहीं। इसलिए मुनासिब है कि सबको वाजिब अलाकराम जान कर तवाज़ो करो।(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 226) अतः यह उसूल हमेशा हर कारकुन को और ख़ुसूसन उन कारकुनान को जिनका बराह-ए-रास्त लोगों से वास्ता पड़ता है सामने रखना चाहिए। खासतौर पर विभाग मेहमान-नवाज़ी और खाने इत्यादि की जो ख़िदमत है वह इस पर बहुत पाबंदी से अमल करें।

इस साल क्योंकि covid की वजह से एहतियात भी बहुत करनी पड़ेगी इसलिए ऐसा इंतेज़ाम होना चाहिए और मेरे ख़्याल में विभाग ने यह इंतेज़ाम करने की कोशिश की है कि खाने के वक़्त ज़्यादा लोग ज़्यादा देर तक बैठे न रहें और खाना खा कर जल्द मारकी से निकल जाएं। मेहमानों को भी इस बात का ख़्याल रखना चाहिए और इंतेज़ामिया से तआवुन करना चाहिए। खाना खाते हुए तो मजबूरी है। वैसे आम तौर पर जैसा कि मैंने कहा मास्क पहने रखने की पाबंदी करें और खाना खाते हुए कम से कम बोलें और बातें करें। ख़ामोशी से खाना खाने की कोशिश करें और जल्द फ़ारिग़ हो कर चले जाएं। न अपने आपको मुश्किल में डालें न इंतेज़ामिया को।

कारकुनान को तो मैंने चंद बुनियादी बातें कह दीं और उन्हें मेहमानों की ख़िदमत की तरफ़ तवज्जा भी दिला दी।

अब मेहमान भी चंद बातें सुन लें। अगर मेहमान इस बात को समझ जाएं और इसकी पाबंदी कर लें जो इस्लाम की तालीम है कि मेहमान अपने मेज़बान पर ग़ैरमामूली, ग़ैरज़रूरी बोझ न डाले तो फिर मुहब्बत और प्यार वाली फ़िज़ा क़ायम रहती है।

मेहमान अगर मेज़बान से ग़लत तवक़्क़ुआत या ज़रूरत से ज़्यादा तवक़्क़ुआत वाबस्ता करें तो मसायल पैदा होते हैं। अतः मेहमानों को भी चाहिए कि ज़रूरत से ज़्यादा तवक़्क़ुआत वाबस्ता न करें। अगर यह सूरत होगी तो फिर घर वाले भी सहूलत में रहेंगे और जिनके सपुर्द मेहमानों का इंतेज़ाम है वे भी और मेहमान भी सहूलत में रहेंगे। अतः इस बात को हमेशा ज़हन में रखें। जमाअती निज़ाम के तहत भी जो ठहरे हुए हैं वे इन कारकुनान के शुक्रगुज़ार हूँ कि उनके अहमदी भाई बहनों ने बावजूद अपनी अच्छी पोज़ीश्नें के अपने आपको मेहमानों की ख़िदमत के लिए पेश किया हुआ है। कई दफ़ा खाना मेहमान के स्वभाव के मुताबिक़ नहीं बनता हालाँकि इस जमाअती रिवायत का हर अहमदी को पता है कि जलसा के दिनों में हमारे हाँ उमूमन आलू गोश्त और दाल पकती है तो मेहमानों को उनके मिज़ाज के मुताबिक़ खाना न भी मिले तो ख़ुशी से खा लेना चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेहमान को मेज़बान की तरफ़ से जो भी खाना पेश किया जाए उसे ख़ुशी से खा लेना चाहिए।

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 5 पृष्ठ 204 हदीस 15048 मुद्रित आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

पिछले सालों में तो यह होता था कि अगर किसी ने लंगर का खाना नहीं खाना या उसका दिल न चाहे तो आरिज़ी तौर पर यहां जलसा के इस इलाक़े में जो बाज़ार लगाया जाता है वहां से जा कर कुछ न कुछ खा लेते हैं। इस दफ़ा तो बाज़ार की सहूलत इस तरह मयस्सर नहीं है इसलिए ऐसे लोगों को जिनके खाने के मिज़ाज मुख़्तलिफ़ हैं अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर ख़ुशदिली से जो मयस्सर हो खा लेना चाहिए लेकिन ज़याफ़त वालों को मैं फिर कहूँगा कि वे अपनी भरपूर कोशिश करें कि अच्छा खाना पकाए। जबकि कुछ लोग होते हैं इस मिज़ाज के लेकिन वे चंद लोग भी बाअज़ दफ़ा परेशानी का बायस बन जाते हैं। अच्छे अख़लाक़ का प्रदर्शन केवल कारकुनों का ही काम नहीं है बल्कि हर शामिल होने वाले का काम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शामिल में होने जलसा ज्ञानियों से भी फ़रमाया कि अच्छे अख़लाक़ का प्रदर्शन करो और एक दूसरे का ख़्याल रखो।

(उद्धरित शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

हमेशा हर शामिल होने वाला ये बात पेश-ए-नज़र रखे कि उसने इस जलसा में शमूलियत अपनी दीनी और इलमी और रुहानी प्यास बुझाने के लिए की है।

और इस बात के हुसूल के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को हमेशा सामने रखना चाहिए कि यह जलसा केवल अल्लाह के लिए जलसा है। इसलिए कभी भी छोटी छोटी बातों पर किसी किस्म की बेचैनी और रंजिश का इज़हार नहीं करना चाहिए। कारकुन भी इन्सान हैं। अगर उनसे कोई ज़्यादती हो जाती है तो अनदेखा करना चाहिए और अपने अख़लाक़ की दरूस्तगी का यह बहुत बड़ा ज़रीया है। यह ठीक है कि बाअज़ दफ़ा ऐसा माहौल बन जाता है जहां आपस में किसी तरफ़ से, मेहमानों की तरफ़ से भी,कारकुनों की तरफ़ से भी, कोई बात दूसरे का ग़ुस्सा भड़काने का बायस बन जाती है। लेकिन आला अख़लाक़ तो यही हैं कि

क्षमा करते हुए इन्सान उस जगह से चला जाए और झगड़े को न बढ़ाए। नौजवानों में कुछ ऐसी सूरत-ए-हाल पैदा हो जाती है तो हमेशा याद रखना चाहिए कि :

हम जिस मक़सद के लिए यहां जमा हुए हैं वे बहुत बड़ा मक़सद है। अपनी रुहानी प्यास बुझाने का मक़सद है, अपने दीनी इलम में इज़ाफ़े का मक़सद है, हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी के तरीक़ सीखना मक़सद है।

तो फिर इसके लिए कम से कम अपने जज़बात की क़ुर्बानी भी देनी होगी और अल्लाह तआला से दुआ के ज़रीया भी मदद मांगनी होगी। जब यह जज़बा उभरेगा, जब ज़बानें ख़ुदा की याद की तरफ़ मुतवज्जा होंगी, जब तौबा और इस्तग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा होगी तो फिर अगर किसी से कोई तकलीफ़ पहुंच भी जाएगी तो क्षमा और दरगुज़र से काम लिया जाएगा। अतः हमेशा इन दिनों में यह बात भी याद रखें कि यहां हम अल्लाह तआला की ख़ातिर अपने घर छोड़कर सफ़र कर के आए हैं। सफ़र की दुआ सिखाते हुए एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह दुआ किया करो कि :

हे अल्लाह हम तुझसे इस सफ़र में भलाई और तक़्वा चाहते हैं।

तू हमें ऐसे नेक अमल करने की तौफ़ीक़ दे जो तुझे पसंद हैं।

(सही मुस्लिम, باب استحباب الذکر اذا رکب...الخ हदीस 3275)

अतः जब हम इस तरह दुआ कर रहे होंगे तो अल्लाह तआला हमारे यहां क़ियाम को भी और सफ़र को भी बरकतों से भर देगा।

अतः इन दिनों को दुआओं और ख़ुदा की याद से भरने की कोशिश करें।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो हमें हर अवसर की दुआ सिखाई है। कुछ लोग अपने घरों को छोड़कर जलसा की बरकात से मुस्तफ़ीज़ होने के लिए आए हैं। उन्हें पीछे अपने घर वालों की फ़िक्र भी होगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह दुआ किया करो :

हे हमारे ख़ुदा मैं पनाह मांगता हूँ सफ़र की सख़्तियों से, नापसंदीदा और बेचैन करने वाले दृश्यों से, माल और अहल-ओ-अयाल में बुरे नतीजा से और ग़ैर पसंदीदा तबदीली से।

(सही मुस्लिम, किताब हज्ज باب استحباب الذکر اذا رکب...الخ हदीस 3275))

बड़ी जामें दुआ है। सफ़र में अपने आपको भी हर तरह से महफ़ूज़ रखने के लिए दुआ है और घर वालों के अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में रहने की भी दुआ है। ऐसी सोच और ऐसी दुआओं से ज़बानों को तर करते हुए जब यहां हर मर्द, औरत फिर रहा होगा तो फिर जहां माहौल पुरस्कून होगा, दिलों की तसकीन के सामान हो रहे होंगे वहां अल्लाह तआला हर बुरे मंज़र से भी बचा के रखेगा।

आजकल covid की वजह से फ़िक्रमंदी भी है। दुआओं की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा देनी चाहिए कि अल्लाह तआला यहां शामिल होने वालों को भी महफ़ूज़ रखे और जो घरों में बैठे हुए हैं अल्लाह तआला उन्हें भी महफ़ूज़ रखे। अतः उमूमी दुआओं के साथ इन दिनों में दुरूद भी खासतौर पर पढ़ें।

इसी तरह नमाज़ों के औक़ात में नमाज़ों के लिए आएं। बाहर बातों में वक़्त ज़ाए न करें। इसी तरह कारकुनान भी नमाज़ों के औक़ात में जिनकी डयूटी नहीं है, बाजमाअत नमाज़ अदा करने की कोशिश करें। इसी तरह सब शामिल होने वाले यह कोशिश करें कि जलसा के प्रोग्रामों के दौरान जलसा गाह में बैठ कर तक़रीरें सुनें।

मुक़र्ररीन ने बड़ी मेहनत से तक़रीरें तैयार की होती हैं। उनसे इलमी और रुहानी फ़ायदा होता है। इसलिए केवल यह न देखें कि कौन अच्छी तक़रीर कर रहा है, कौन अच्छा निर्धारित है। ये देखें कि नफ़स-ए-मज़मून क्या है और इस का कितना फ़ायदा है। उमूमन तक़रीरें ऐसे मौज़ूआत पर होती हैं जिनकी उस वक़्त ज़रूरत है और अगर ग़ौर से सुनी जाएं तो बहुत से सवालात के जवाबात मिल जाते हैं जो दिलों में पैदा हो रहे होते हैं।

अतः तक़रीरों को बहुत ग़ौर से बैठ कर सुनें। इस मर्तबा तो बाज़ार नहीं है जैसा कि मैंने कहा है लेकिन जलसा के प्रोग्रामों में वक़फ़ा के दौरान जो मुख़्तलिफ़ नुमाइशें लगाई गई हैं, जबकि छोटे पैमाने पर हैं इस दफ़ा, वहां जाएं और उनको देखें। उनसे फ़ायदा उठाएं। इन शा अल्लाह तआला हालात ठीक होंगे तो नुमाइशें भी वसीअ हो जाएँगी और बाक़ी निज़ाम भी इसी तरह चलना शुरू हो जाएगा। यह भी ख़्याल रखना चाहिए कि इस दफ़ा ख़ुशक मौसम भी है। बारिशें नहीं हुईं। इसलिए मुझे उम्मीद है पिछले साल की तरह कार पार्किंग में इतनी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा इंशा-ए-अल्लाह। पिछले साल तो बारिशों की वजह से बहुत ज़्यादा दिक़्क़त हुई थी। वैसे भी इस साल बेहतर इंतेज़ाम है। ट्रैक वग़ैरा का इंतिज़ाम बेहतर किया गया है तथा मुस्तक़िल बुनियादों पर पानी के निकास के लिए माहिरीन की मदद से पानी के निकास का वसीअ काम हुआ है। पिछले महीने जो बारिशें हुई थीं उनमें जिस तरह पानी की निकासी हो रही थी इस ज़रीया से लगता है इन शा अल्लाह तआला आइन्दा भी यह बड़ा फ़ाइदेमंद साबित होगा। बहरहाल इस साल तो इन दिनों में ख़ुशक मौसम की पेशगोई है लेकिन कार पार्किंग में कई दफ़ा ज़्यादा कारों के आने की वजह से इंतेज़ामिया को भी बाअज़ दिक्कतों का सामना करना पड़ता है लेकिन अगर कारों पर आने वालों का तआवुन हो तो आराम से यह सब कुछ कंट्रोल हो जाता है। इसलिए सब्र और हौसले से कारों पर आने वाले ट्रैफ़िक के निज़ाम के साथ तआवुन करें ताकि किसी भी किस्म की दिक़्क़त न हो।

इसी तरह जैसा कि मैं हर साल कहता हूँ टायलेट्स प्रयोग करने वाले, ग़ुस्ल-ख़ाने प्रयोग करने वाले जो हैं वे सफ़ाई का भी ख़्याल रखें और इस साल खासतौर पर पानी को भी ज़ाए न करें। कम बारिशों की वजह से हुकूमत ने भी कम पानी प्रयोग करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई है। एहतेयात से पानी प्रयोग करें। इसी तरह ख़ुशक घास को बड़ी आसानी से यहां आग लग जाती है। इस बारे में भी ख़ास एहतेयात करें। किसी भी किस्म की बे एहतेयाती मुश्किल पैदा कर सकती है। अपनों को या हमसाइयों को नुक़्सान पहुंचा सकती है। हिफ़ाज़ती नुक़्ता-ए-नज़र से भी हर एक को मुहतात होना चाहिए। माहौल पर गहरी नज़र रखें। कोई बैग या कोई ऐसी चीज़ पड़ी नज़र आए।

जिस पर शक हो तो फ़ौरन इंतेज़ामिया को इत्तिला करें। इंतेज़ामिया भी और स्कैनिंग वाले भी कार्ड चैक करते हुए मास्क उतार कर हर एक का चेहरा देखें कि कार्ड की तस्वीर के मुताबिक़ है कि नहीं।

अल्लाह तआला हर छल से हर एक को महफ़ूज़ रखे और अपनी ख़ास बरकात नाज़िल फ़रमाता रहे।

फिर दुबारा मैं कहता हूँ कि इन दिनों में ख़ुदा किय याद और इबादतों की तरफ़ ख़ास तवज्जा रखें। जमाअत की तरक़्क़ी और दुश्मनों से महफ़ूज़ रहने के लिए बहुत दुआएं करें। असीरान जो क़ैद-ओ-बंद की मुश्किलें बर्दाश्त कर रहे हैं उनके लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनकी जल्द रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए। जुमा की नमाज़ में भी और जुमा के बाद भी, बाक़ी दिनों में भी ख़ास दुआएं करते रहीं।

आख़िर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसा के हवाले से दुआइया कलेमात पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं :

"हर एक साहिब जो इस लिल्लाही जलसा के लिए सफ़र इख़्तेयार करें ख़ुदा तआला उनके साथ हो और उनको अज्र-ए-अज़ीम बख़्शे और उन पर रहम करे और उनकी मुश्किलात और इज़्तेराब के हालात उन पर आसान कर देवे और उनके हम-ओ-ग़म दूर फ़रमावे और उनको हर-यक तकलीफ़ से मख़लेसी इनायत करे और उनकी मुरादात की राहें उन पर खोल देवे और रोज़े आख़िरत में अपने इन बंदों के साथ उनको उठावे जिन पर उसका फ़ज़ल-ओ-रहम है और सफ़र के अंत में उनके बाद उनका ख़लीफ़ा हो। हे ख़ुदा हे दयालु और कृपालु ख़ुदा और मुश्किल-कुशा यह समस्त दुआएं क़बूल कर और हमें हमारे मुख़ालिफ़ों पर रोशन निशानों के साथ ग़लबा अता फ़र्मा कि हर-यक क़ुव्वत और ताक़त तुझ ही को है। आमीन"

(मजमूआ इश्तेहारत भाग 1, पृष्ठ 342)

अल्लाह तआला जलसा में शामिल होने वाले सब मर्दों ज़न को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। कुछ लोग जलसा में शामिल होने की नीयत से बाहर के देशों से भी आए हैं लेकिन यहां आकर बीमार हो गए या कुछ बड़ी ख़ाहिश से शामिल होना चाहते थे लेकिन शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला उनको भी उनकी नीयतों का अज्र दे और इन दुआओं का उन्हें भी वारिस बनाए।

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 15 September 2022 Issue No. 37

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

* .... हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने वाली औरत के बारे में हुज़ूर ने अपने एक ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया था जबकि एक हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क़तल करवा दिया था, इस बारे में मज़ीद राहनुमाई की दरख़ास्त है।

* .... जब हम अपनी मर्ज़ी से पैदा नहीं हुए तो ख़ुदा तआला के अहकामात की पैरवी हम पर क्यों लाज़िम है? तथा लिखा कि दुआ-ए-क़नूत में जो यह वाक्य है कि "हम छोड़ते हैं तेरे नाफ़रमान को" तो क्या इस से मुराद नाफ़रमान औलाद और जमाअत के लगो भी हो सकते हैं?

*.... क्या किसी की मौत का अंजाम उसके मज़हबी अक़ायद पर आधारित है?

* ... जलसा सालाना जर्मनी में एक तक़रीर में दज्जाल को एक शख़्स के बजाए इस्तिआरे के तौर पर पेश किया गया था लेकिन पिछले दिनों एक वीडीयो में सही मुस्लिम की एक हदीस का वर्णन था जिसमें दज्जाल को एक मुजस्सम इन्सान क़रार दिया गया है। क्या यह हदीस authentic है?

* ... आजकल के हालात की वजह से ग़ैर मुस्लिम, मुस्लमानों से डरते हैं। हम उन्हें कैसे तसल्ली दे सकते हैं?

* ... जब कोई मुस्लमान फ़ौत होता है तो हम इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ते हैं। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम फ़ौत हो तो क्या हम उसके लिए भी यह पढ़ सकते हैं या नहीं?

* .... अल्लाह तआला जब हमारी तक़दीर लिख देता है तो फिर हम दुआ क्यों करते हैं, हमें दुआ की क्या ज़रूरत होती है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-21) भाग - 2

लेकिन इसके साथ अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़रीया हमें यह ख़बर दी कि जब दज्जाल और याजूज माजूज के फ़ित्ने बरपा होंगे और इस्लाम कमज़ोर हो जाएगा तो अल्लाह तआला इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए मसीह मौऊद को मबऊस फ़रमाएगा। उस वक़्त मुस्लमानों के पास माद्दी ताक़त न होगी लेकिन मसीह मौऊद की जमाअत दुआओं और तब्लीग़ के साथ काम करती चली जाएगी। जिसकी बदौलत अल्लाह तआला इन फ़ित्नों को ख़ुद हलाक कर देगा।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अतफ़ालुल अहमदिया जर्मनी की virtual मुलाक़ात तिथि 29 नवंबर 2020 ई. में एक तिफ़्ल के इस प्रश्न पर कि आजकल के हालात की वजह से ग़ैर मुस्लिम, मुस्लमानों से डरते हैं। हम उन्हें कैसे तसल्ली दे सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया :

उत्तर : हम तो हमेशा से ही कोशिश कर रहे हैं, पिछले कई सालों से कोशिश कर रहे हैं। इसी लिए में peace symposium भी करता हूँ। तुम लोगों को भी कहता हूँ कि peace symposium करो। peace के पमफ़लेट तक़सीम करो। लोगों को बताओ कि इस्लाम की असल तालीम क्या है। इस्लाम की असल तालीम तो प्यार और मुहब्बत की तालीम है। लोगों को बताओगे तो उनका डर दूर होगा। हमारी कोशिश जितनी ज़्यादा होगी उतनी लोगों में awareness ज़्यादा पैदा होगी, लोगों को इस्लाम के बारे में सही हालात का इलम होगा। इसलिए हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को बताएं, अपने दोस्तों को बताएं। स्कूल में तुम्हारे दोस्त होंगे। उनको बताओ कि इस्लाम की असल तालीम क्या है। असल तालीम तो यह है कि प्यार और मुहब्बत। और इस्लाम किसी किस्म की जंग और जिहाद की इजाज़त नहीं देता बल्कि इस्लाम ने जहां जंग की इजाज़त दी है या जिहाद की इजाज़त दी है, वहां जब जिहाद करने का पहला हुक्म उतरा तो अल्लाह मियां ने क़ुरआन-ए-करीम में लिखा कि तुम्हें जिहाद की इसलिए इजाज़त दी जा रही है कि ये लोग तुम पर ज़ुलम कर रहे हैं और अगर उनके ज़ुलम को नहीं रोकोगे तो फिर न कोई चर्च बाक़ी रहेगा और न कोई यहूदियों का synagogue बाक़ी रहेगा, न कोई टेंपल बाक़ी रहेगा और न कोई मस्जिद बाक़ी रहेगी। तो इस्लाम ने अगर जिहाद की इजाज़त दी है तो मज़हब को secure करने के लिए दी है , मज़हब को महफ़ूज़ करने के लिए दी है। इस्लाम ने कहीं यह इजाज़त नहीं दी कि मज़हब फैलाने के लिए तुम्हें जिहाद करने और क़तल करने की इजाज़त है। इस्लाम तो कहता है कि अगर तुम देखो कि ईसाइयों के चर्च पर कोई हमला कर रहा है तो मुस्लमान का फ़र्ज़ है कि जाए और ईसाइयों के चर्च को बचाए। इस्लाम कहता है कि अगर यहूदीयों के synagogue पर कोई हमला कर रहा है तो तुम जाओ और यहूदीयों के synagogue को बचाओ। इस्लाम कहता है कि हिंदूओं के टेंपल पर कोई हमला कर रहा है तो तुम जाओ और उसको बचाओ और इस तरह तुम अपनी मस्जिद को भी बचाओ। इस्लाम तो सबकी हिफ़ाज़त करता है। इसलिए लोगों को यह खुल के बताना पड़ेगा, अपने दोस्तों को बताओ कि क़ुरआन-ए-करीम में यह लिखा हुआ है। लोगों को यह बताओ कि ये लोग जो मुस्लमान बने फिरते हैं, जो jihadist हैं या जो extremists हैं, ये जो शिद्दत-पसंद हैं ये ग़लत बातें फैला रहे हैं ये इस्लाम की तालीम नहीं फैला रहे। जब तुम बताओगे तो लोगों को पता लग जाएगा कि इस्लाम कितना अमन क़ायम करने वाला और प्यार करने वाला मज़हब है। ठीक है?

शेष आगे.....

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad